मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

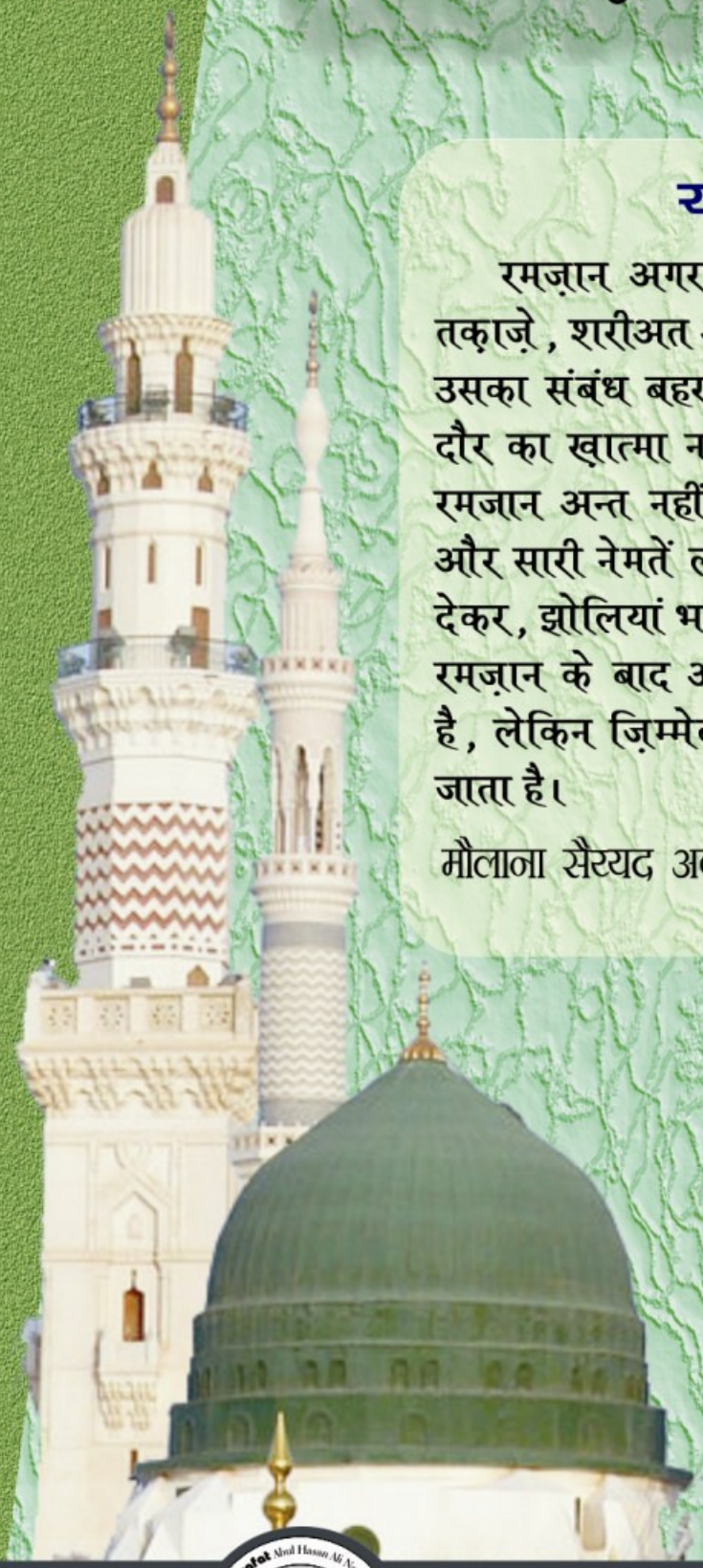

रमज़ान के बाद

रमज़ान अगर रुख़सत हुआ, तो ईमान और उसके तक़ाज़े, शरीअत और उसके हुक्म, अल्लाह तआला और उसका संबंध बहरहाल बाक़ी हैं। रमज़ान अस्ल में एक दौर का ख़ात्मा नहीं बल्कि एक दौर की शुरूआत है। रमजान अन्त नहीं आरम्भ है। रमज़ान सबकुछ लेकर और सारी नेमतें लपेट करके नहीं जाता, वो बहुत कुछ देकर, झोलियां भर कर, और नेमतें लुटा कर जाता है, रमज़ान के बाद आदमी गुनाहों से ज़रूर हल्का होता है, लेकिन ज़िम्मेदारियों से बोझिल और गिरांबां हो जाता है।

मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०

AUG 12

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

₹10/-

रमज़ान को रोज़ों के साथ ख़ास क्यों किया गया?

अल्लाह तआला ने रोज़े रमज़ान में फ़र्ज़ किये हैं, और दोनों को एक दूसरे के साथ आवश्यक घोषित कर दिया है और वास्तविकता ये है कि इन दो बरकतों और नेकियों का मिलन बड़ी हिकमत और अहमियत वाला है और इसका सबसे बड़ा कारण ये है कि रमज़ान ही वो महीना है जिसमें कुरआन मजीद नाज़िल हुआ गुमराह इन्सानियत को "सुबह–ए–सादिक़" नसीब हुई। इसलिये ये इसी अनुसार था कि जिस तरह सुबह सूरज निकलने से पहले को रोज़े की शुरूआत से जोड़ दिया गया है उसी तरह इस महीने को भी। जिसमें एक लम्बी और अंधेरी रात के बाद पूरी इन्सानियत की सुबह हुई। पूरा महीना रोज़े के साथ ख़ास कर दिया जाये, ख़ास तौर पर उस समय जबकि रहमत व बरकत, आन्तरिक व बाह्य संबंध के लिहाज़ से भी ये महीना सभी महीनों से श्रेष्ठ था, और सही तौर पर इसका हक़दार था कि उसके दिनों को रोज़े से और रातों को इबादत से जोड़ा जाये।

रोज़े और कुरआन के बीच बहुत गहरा संबंध है और ख़ास रिश्ता है और इसीलिये हुज़ूर स०अ० रमज़ान में तिलावत का ज़्यादा से ज़्यादा एहतिमाम करते थे। इब्ने अब्बास रज़ि० रावी हैं कि रसूलुल्लाह स०अ० सबसे ज़्यादा सख़ी थे, लेकिन रमज़ान में जब जिब्राईल अलै० आप स०अ० से मिलते आते तो इस ज़माने में सख़ावत का मामूल बढ़ जाता, जिब्राईल अलै० रमज़ान की हर रात में आपके पास आते और कुरआन पाक का दौर करते। उस वक़्त जब जिब्राईल अलै० आप से मिलने आते आप स०अ० सख़ावत दादो दहिश और नेकी के कामों में तेज़ हवा से भी तेज़ नज़र आते थे।

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०

(इस्लाम का परिचय: ६१–६२)

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक: ८ | अगस्त २०१२ ई० | वर्ष: ४

संरक्षक

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी
अध्यक्ष - दारे अरफ़ात

निरीक्षक

मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेक्रेट्री- दारे अरफ़ात

सम्पादकीय मण्डल

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी
मो० हसन नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ाँ नदवी

प्रति अंक–10रू० वार्षिक–100रू०
सम्मानीय सदस्यता–500रू० वार्षिक

www.abulhasanalinadwi.org
FAX-0535-2211386
E-Mail: markazulimam@gmail.com

इस अंक में:

रमज़ान और रमज़ान के बाद.....२
हज़रत मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी

पश्चिम की इस्लाम दुश्मनी में मीडिया का किरदार.....३
मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

शब–ए–क़द्र.....५
शमसुल हक़ नदवी

मस्जिद–ए–अक़्सा की शहादत का इस्राईली मन्सूबा और मुस्लिम देशों की बेहिसी.....६
मौलाना असरारुल हक़ कासमी

रमज़ानुल मुबारक के फ़ज़ाएल और कुछ मसाएल.....८
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

मुसलमान और भौतिकविज्ञान.....११
मौलाना सिराजुद्दीन नदवी

बेटी की पैदाइश ज़हमत नहीं रहमत है.....१३
मुफ़्ती फ़य्याज़ अहमद महमूद बरमारे हुसैनी

दहशतगर्दों की आर्थिक सहायता.....१५
डाक्टर मुहम्मद अजमल फ़ारूक़ी

आप स०अ० की रहमदिली जानवरों के साथ.....१६
मुफ़्ती मुहम्मद मुजीबुर्रहमान देवदगी

आपके दीनी सवालात और उनके जवाबात.....१८
ग़ैर मुस्लिमों के साथ संबंध.....१९
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खाँ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

रमज़ान और रमज़ान के बाद

हज़रत मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी

रमज़ानुल मुबारक के महीने की मिसाल एक साफ़–सुथरे पानी की नदी की है जिसके अन्दर से गुज़र कर मुसलमान एक पार से दूसरे पार होते हैं और अपनी दीनी ज़िन्दगी के नये साल में दाख़िल होते हैं जिसमें वो अपने पिछले साल की कोताहियों और कमज़ोरियों की गन्दगी से नहा–धोकर साफ़ सुथरे होकर निकलते हैं और अपनी ज़िन्दगी को नये सिरे से साफ़–सुथरे हाल में शुरू करते हैं।

हुज़ूर स0अ0 की हदीस है कि आपने हज़रत जिब्राईल की इस दुआ पर आमीन कही जिसमें उन्होने एक मुसलमान की ये बदक़िस्मती और ख़राबी बतायी कि रमज़ान आया हो और वो अपने गुनाहों से बख़्शिश न हासिल कर सके। इसी बिना पर रमज़ान के बाद का ज़माना एक मुसलमान की दीनी ज़िन्दगी का नया साल है जिसको वो साफ़ सुथरे और नये सिरे से शुरू करता है।

रमज़ान से एक तरफ़ मुसलमान की ज़िन्दगी का निरीक्षण होता है और दूसरी तरफ़ उससे नया हौसला मिलता है और तक़वा व पाकी की मश्क़ भी होती है। महीने के 29–30 दिन इस हालत में गुज़रे हुए होते हैं कि हर रोज़ भूख व प्यास पर सब्र करना पड़ता है और ये सब्र किसी मजबूरी या लाचारी से नहीं कि मायूसी की कैफ़ियत की वजह से सिर्फ़ नाम का सब्र हो बल्कि अपने इरादे और नफ़्स के ज़ब्त के साथ जिसमें सेहत व हौसले का जज़्बा होता है और चूंकि वो परवरदिगार के हुक्म की तामील में और उसकी रज़ा के लिये होता है इसलिये एक तरफ़ उससे हौसला व हिम्मत की तरबियत व मश्क होती है और दूसरी तरफ़ वो इबादत के हुक्म में दाख़िल होकर अल्लाह की रज़ा और आख़िरत की कामयाबी का ज़रिया बनता है।

रमज़ानुल मुबारक की पाकीज़गी और खूबी की ही बात है कि अल्लाह तआला के मर्ज़ी के और दीनी हैसियत से अहमतरीन वाक़्यात इसी माह में पेश आये। बदर की जंग का वाक़्या जिसमें हक़ व बातिल की कशमकश में पांसा इस्लाम के हक़ में पलट गया और फ़तह मक्का का वाक़्या जिसने इस्लामी इतिहास के धारे को ज़बरदस्त और नया रुख़ दिया और उससे भी ज़्यादा ये बात कि अल्लाह तआला का कलाम इसी महीने नाज़िल हुआ और ज़मीन वालों को इससे नेकी व नेअमत अता की गयी।

रमज़ानुल मुबारक की ये और दूसरी बहुत सी खूबियां और अज़मतें हैं जिनकी बिना पर इस महीने को सही तरीक़े से गुज़ारने वाले मुबारकबाद पाने के क़ाबिल हैं जिन्होने इसकी नेमतों से अपने दामन भरे और इसकी बरकतों से मालामाल हुए। उनकी इस कामयाबी का जश्न ईद के दिन के ज़रिये ज़ाहिर होता है जिसको "ईदुल फ़ित्र" कहते हैं। यानि रोज़े से फ़ारिग़ होने की ईद। इस दिन मुसलमान अपनी खुशी का इज़हार साफ़ सुथरे कपड़े पहन करके, और अपने रब के सामने शुक्र का सजदा करके यानि ईद की नमाज़ अदा करके करते हैं और एक दूसरे को मुबारकबाद देते हैं कि उन्होने ये महीना उसके आदाब के साथ और उसकी बरकत हासिल करके गुज़ारा और अब वो रश्क़ के क़ाबिल भी हैं और मसरूर भी।

लेकिन ये महीना अपने पीछे बहुत सी ज़िम्मेदारियां भी छोड़ जाता है। ये ज़िन्दगी के बहुत से मामलों में सलाह और सब्र को अपनाने का सबक़ सिखा जाता है। वो एक नेक मुसलमान की अज़्म व हिम्मत को बढ़ावा देने वाला साबित होता है कि अब वो अपनी ज़िन्दगी को ज़्यादा बेहतर और साफ़ बनायेगा और माहे रमज़ान में उसने जो सब्र दिखाया उसको जारी रखेगा।

रमज़ानुल मुबारक की हैसियत एक तरह के तरबियती कैम्प की है जिसमे न सिर्फ़ एक ख़ास क़िस्म की पाबन्द ज़िन्दगी गुज़ारना पड़ती है बल्कि आगे के लिये और ताक़त और सलाहियत पैदा की जाती है। रमज़ानुल मुबारक का जो काम व्यक्तिगत जीवन में करना होता है रमज़ान के बाद उसका एक तरह का इजरा आम ज़िन्दगी में करता है। रमज़ानुल मुबारक में रोज़ाना चन्द घन्टों के लिये अपनी पसन्द और ज़रूरत की कई बातों से परहेज़ करना होता है कि प्यासा है लेकिन इतने समय तक पानी नहीं पीना है जबकि पानी हर तरफ़ मौजूद है और दावत ज़ौक़ व तलब दे रहा है। भूख है लेकिन उतने समय तक मुंह में एक निवाला भी नहीं डालता है। घर वालों के साथ है लेकिन उनसे अपनी इच्छा का न प्रकट करना क्योंकि परवरदिगार और मालिक ने मना किया है। इसलिये अपने परवरदिगार और मालिक के हुक्म को पूरा करने के लिये वो सब्र करता है और अपने दिल को भी संभाले रखता है।

..... (शेष पेज 20 पर)

पश्चिम की इस्लाम दुश्मनी में मीडिया का किरदार

गौलाना सैय्यद वाजेह रशीद हसनी नदवी

जब जब मुसलमानों ने कुरआन करीम की बेहुरमती और नबी स0अ0 की शान में गुस्ताख़ी के ख़िलाफ़ विरोध किया, पश्चिमी मीडिया का जोश देखने वाला हो गया। प्रिन्ट मीडिया हो या इलेक्ट्रानिक मीडिया दोनों ही ने मुसलमानों के ख़िलाफ़ इस अवसर का भरपूर इस्तेमाल किया, मानों उन्होने अपने अख़बार को सनसनीख़ेज़ बनाने के लिये गरम मसाला मिल गया और मुसलमानों के विरोध को दक़ियानूसियत व रूढ़िवादिता की संज्ञा दी गयी और उसे राय प्रकट करने की स्वतन्त्रता पर हमला घोषित कर दिया गया।

पश्चिमी मीडिया का ये हमेशा से चलन रहा है कि उन्होने मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों को आहत व क्षीण करने का प्रयास किया है और इस्लामी इतिहास को बिगाड़ने का काम किया और उसने कभी इसके परिणाम पर ग़ौर नहीं किया, न सही ग़लत की उसने खोज की, न पत्रकारिता के उसूल व नियमो का ध्यान रखा, बल्कि ऐसी ख़बरों को और मिर्च मसाला लगाकर प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित किया।

पश्चिमी मीडिया का पक्षपात और उसकी इस्लाम दुश्मनी उस समय खुलकर सामने आ जाती है जब कोई इस्लामी व्यक्तित्व किसी ग़लत रूझान के ख़िलाफ़ या समाज में फैली हुई बेहयाई के ख़िलाफ़ अपनी राय प्रकट करता है और उससे बचने का तरीक़ा भी बताता है। मीडिया उसे जनता के सामने एक नकारात्मक तत्व की तरह प्रस्तुत करता है, उसके ख़िलाफ़ मोर्चा खोलता है, फिर देखते ही देखते रेडियो, टेलीविज़न के ज़रिये ये विषय अन्तर्राष्ट्रीय चर्चा का विषय बना दिया जाता है, बल्कि ये विषय एक निर्णायक विषय घोषित कर दिया जाता है, जिस पर हर व्यक्ति अपनी राय देने को ज़रूरी समझता है और जिसको इस विषय से जितनी जानकारी होती है, इल्मी हल्क़े में जो स्थान प्राप्त होता है, इस्लाम की दुश्मनी में जितना कुख्यात होता है, उतने ही उसके लेख प्रकाशित किये जाते हैं, उसकी राय को जनता की राय घोषित कर दिया जाता है, उसके कामों को जनता के काम की संज्ञा दी जाती है और लम्बी गर्मागरम बहस के बाद ये राय सुनने में आती है कि मुसलमान जहां भी रहते हैं बिखराव पैदा करके रहते हैं और हमेशा पश्चिमी विचारों की बुराई करते रहते हैं जिनके बिना आज के इस दौर में उन्नति प्राप्त करना असंभव है। ऐसे नकारात्मक दृष्टिकोण और वास्तविकता के विरुद्ध बातों पर अगर मुसलमान विरोध भी करते हैं तो उनका स्तर निहायत संकुचित रहता है, क्योंकि मीडिया की ताक़त उनके पास नहीं है।

इस्लाम विरोधी पश्चिम के दृष्टिकोण को इस वाक़्ये से भी समझा जा सकता है कि एक विख्यात पश्चिमी लेखक ने एक अख़बार में ये लिखा कि मुसलमान अपने दीन में दूसरों को राय देने की इजाज़त नहीं देते, तो उनको भी दूसरों के दीन में राय देने का अधिकार नहीं होना चाहिये। इसी तरह की बातों से न केवल उनकी इस्लाम दुश्मनी ज़ाहिर होती है बल्कि इतिहास से अपिरिचितता भी सामने आती है। अगर उन्होने न्यायिक तौर पर इतिहास का अध्ययन किया होता तो इसको अवश्य स्वीकार करते कि मुसलमानों ने हमेशा सभी धर्मों का सम्मान किया है और दूसरों को भी किसी के दीन की तौहीन करने से रोका है। उनके गिरिजाघरों को पूरा संरक्षण दिया है, बल्कि जिहाद के दौरान भी उनको नहीं छेड़ा। अपने पूरे शासनकाल में मुसलमानों ने ग़ैरमुस्लिमों के साथ रहम का मामला किया, और ये सब दुनियावी लालच के लिये नहीं किया, क्योंकि दुनिया उस समय उनके पास थी, स्याह–सफ़ेद के वो मालिक थे जिस तरह का सुलूक वो जिसके साथ करना चाहते कर सकते थे, कोई उनको रोकने की पोज़ीशन में नहीं था, लेकिन उन्होने इन्सानियत के नाते और अल्लाह के हुक्म को पूरा करते हुए उनके साथ दरगुज़र का मामला किया बल्कि यहां तक हुआ कि मुसलमानों ने उनको इतनी आज़ादी दे दी जो इस्लामी अक़ीदे और इस्लामी शासन के लिये ख़तरा बन गयी और यही चीज़ मुस्लिम समाज में ग़ैरमुस्लिम रस्म व रिवाज के फैलने का कारण बनी। ये मामला ग़ैर मुस्लिमों ने अपने शासनकाल में मुसलमानों के साथ नहीं किया बल्कि उन्होने वो सब किया जो एक विजयी क़ौम पराजित क़ौम के साथ करती है। साम्राजी दौर में यूरोप ने इस्लाम को बदनाम करने के लिये उनके सुनहरे अतीत को काले कारनामे के तौर पर जनता के सामने लाने के लिये और इस्लामी अक़ीदे में बिगाड़ पैदा करने के लिये, सच को झूठ और झूठ को सच साबित करने के लिये पुस्तकालयों की बुनियाद डाली, जहां से उन्होने इस्लामी किताबों में बदलाव के नापाक और निंदनीय प्रयास किये। आप स0अ0 की पाक सीरत न्याय पर आधारित जीवन को मकरूह शक्ल में पेश करने का काम

अन्जाम दिया और वास्तविकताओं को बदल कर रख दिया, आप स0अ0 पर ज़बान दराज़ी की गयी, उनकी किताबें इस तरह के विषयों से भरी हुई हैं, और जो कुछ उनके दिलों में हैं, वो तो उससे भी ज़्यादा है, उनके विख्यात साहित्यकार व लेखक, खोजी जब इस्लाम और मुसलमानों के बारे में लिखना शुरू करते हैं तो शराफ़त का झूठा लबादा भी उतार देते हैं और खुलकर अपने अरमान पूरे करते हैं, खुलकर ज़बान चलाते हैं। किताबें छापते हैं, उनको बंटवाते हैं, यहां तक कि इस विषय पर आधारित किताबों का पढ़ना यूनिवर्सिटी में और कालिजों में रिसर्च स्कालरज़ पर अनिवार्य कर दिया जाता है और ये रूझान आज भी है, और ये बात इन किताबों के अध्ययन से साफ़ हो जाती है कि और उन किताबों के ज़रिये यूरोप व पश्चिम वालों के काम व सोच का पता चलता है और इस्लाम दुश्मनी में वो कितना गिर सकते हैं इसका उससे अन्दाज़ा होता है। यहां तक कि उनके चिन्तकों ने मुसलमानों का संबंध आप स0अ0 से ख़त्म करने की कोशिश की।

अस्ल में यूरोप में इस्लामी समाज और ग़ैर इस्लामी समाज में कुछ अन्तर हैं। वहां इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ लिखी गयी चीज़ें उससे कहीं ज़्यादा है जो दूसरे धर्मों के ख़िलाफ़ है। यहां तक कि वहां इस्लाम की दावत देना मना है और इस्लामी सभ्यता अपनाने की बात करना भी जुर्म है। किसी भी इस्लामी संस्था को सहायता पहुंचाने की इजाज़त नहीं, बल्कि उस पर दहशतगर्दी का लेबल चस्पा कर दिया जाता है और कार्यवाही की ताज़ा मिसाल बर्तानिया में हाल ही में किसी इस्लाम और मुसलमान के ख़िलाफ़ की गयी कार्यवाही है जब सात मुसलमानों को दहशतगर्दी के लिये पूंजी एकत्र करने के शक पर गिरफ़्तार कर लिया गया, दहशतगर्दी जब किसी धर्म के साथ ख़ास नहीं, और यूरोप वाले जब इसका ऐलान करते रहते हैं कि सभी धर्म अमन व शांति की शिक्षा देते हैं, तो दहशतगर्दी के नाम पर सिर्फ़ मुसलमानों को क्यों गिरफ़्तार किया जाता है।

बेल्जियम की अदालत ने उस मुस्लिम लीडर के ख़िलाफ़ जिसने इस्लामी शरीअत को लागू करने की मांग की थी दो साल की क़ैद का हुक्म सुनाया, और पांच सौ पचास यूरो का जुर्माना भी लगाया और फ़्रांस में हाल ही में चार मुसलमान उलमा के फ़्रांस प्रवेश पर पाबन्दी लगा दी गयी और वहां से इस्लाम के लिये काम करने वालों को निकल जाने का आदेश दिया गया। स्वतन्त्र राय और स्वतन्त्र रूप से कार्य करने की बात करने वालों के ज़र्फ़ का ये हाल है, लेकिन इन सब वाक़्यों पर पश्चिमी मीडिया ख़ामोश रहा, उसकी तरफ़ से उन वाक़्यों पर कोई चर्चा नहीं हुई आख़िर क्या कारण है कि दूसरे धर्म और उसके मानने वालों पर पाबन्दी नहीं लगायी जाती, ग़ैर मुस्लिमों के स्कूल व कालिजेस वहां खुले हुए हैं, और उनकी आस्था की शिक्षा दी जाती है और इस्लाम के ख़िलाफ़ दुश्मनी का रवैया अपनाया जाता है। इस्लामी देशों में छात्राओं पर यूरोप की सभ्यता अपनाना आवश्यक घोषित कर दिया जाता है, और उन देशों में जहां मुसलमान संख्या में अधिक हैं वहां भी उनको इस्लामी कामों को पूरा करने से रोकने में हर तरह के हथकन्डे अपनाये जाते हैं, उनको दबाया जाता है, उनको दीनी आज़ादी से वंचित रखा जाता है और कई वो देश जो अपनेआप को सेक्यूलर कहते हैं जिनमें हमारा देश हिन्दुस्तान भी है वहां मुस्लिम छात्राओं को वन्दे मातरम गाने पर और सूरज की पूजा करने पर मजबूर किया जाता है वरना स्कूल से निकाल देने की धमकी दी जाती है, और इन सब पर मीडिया ख़ामोश रहता है। इसी तरह एक ईसाई पादरी जून ने अमरीका के एक शहर फ़्लोरेडा में क़ुरआन करीम को जलाकर बेहुरमती की, और कई देशों में तो दाढ़ी और इस्लामी लिबास पर पाबन्दी लगा दी गयी, और अब तो दीनी मदरसों की स्थापना पर भी सवाल उठाये जा रहे हैं, मगर उन सब पर मीडिया ख़ामोश है, तमाशाई बना बैठा है, अपनी ज़िम्मेदारी से पीछा छुड़ा रहा है, प्रजातन्त्र को समाप्त कर रहा है, अपनी स्वतन्त्रता को एक अलग ग्रुप के हाथों बेच रहा है, सच्चाई से आंखे चुरा रहा है, और झूठ पर आधारित ख़बरों को पहले पन्ने की सबसे अहम ख़बर बनाकर पेश करता है।

आज का मीडिया झूठी ताक़तों का ग़ुलाम बन चुका है और इस्लाम दुश्मन तत्वों के हाथों का खिलौना बन चुका है क्योंकि जो भी ख़बर अपनी आज़ादी खो देती है वो ऐसे ही दूसरे के हाथों का ख़िलौना बन जाती है। आवश्यकता है कि मीडिया में सुधार किया जाये ताकि वो अपनी ज़िम्मेदारी को सही तरीक़े से अन्जाम दें, और अपनी आज़ादी को हासिल करें, सच को जनता के सामने लायें, बल्कि मीडिया सच की पहचान बन जाये ताकि वो अपनी ज़िम्मेदारी को सही तरीक़े से अन्जाम दे और अपनी आज़ादी को हासिल करे, सच को जनता के सामने लाये, बल्कि मीडिया सच की पहचान बन जाये ताकि दुनिया फिर से अमन का गहवारा बन जाये और अमन व सुकून की हवाएं फिर चलने लगें।

मिस्र के मशहूर लेखक, साहित्यकार उस्ताद महमूदुल उक़्क़ाद ने मक्की ज़िन्दगी का नक़्शा खींचते हुए मक्की जीवन को इस्लाम की अहम विशेषता की दलील के तौर पर इस तरह बयान किया है। ..... (शेष पेज 14 पर)

शब–ए–क़द्र

मौलाना शमसुल हक़ नदवी

रमज़ानुल मुबारक वो मुबारक महीना है जिनमें मानवता को उसकी मार्गदर्शक किताब मिली। ज़िन्दगी के हंगामों, हवस के तूफ़ानों, हिस्र व लालच की जगह जीवन व्यतीत करने की पूरी व्यवस्था मिली। (रमज़ान का महीना वो है जिसमें कुरआन नाज़िल हुआ) (सूरह बक़रा)

इसी मुबारक महीने की वो मुबारक रात थी जिसमें खुदा का कलाम–ए–रूह परवर उतरा। कितनी सुहानी, कितनी रोशन और कितनी नूरानी है वो रात जिसमें मिट्टी के पुतले को ज़िन्दगी की राहों में चलने के लिये हिदायत का रोशन चिराग़ मिला। वो रात है लैलतुल क़द्र। इज़्ज़त व एहतराम की रात, वो रात जो हज़ार महीनों से बेहतर है। दो फ़रिश्तों की आमद की रात है कि आसमान की बातें ज़मीन वालों को सुनाएं। वो अमन व सलामती की रात है कि उसमें दुनिया के लिये अमन व सलामती का पैग़ाम उतराः

"हमने कुरआन को इज़्ज़त व हुरमत वाली रात में नाज़िल किया और हां तुम्हे किसने बताया कि इज़्ज़त व हुरमत वाली रात क्या है? वो जो हज़ार महीनों से बेहतर है जिसमें फ़रिश्ते और रूहुल्कुद्स अल्लाह के हुक्म से नाज़िल होते हैं इस रात में सुबह सादिक़ तक बरकतों और रूहानी रौनक़ों का ये सिलसिला जारी रहता है।" (सूरह क़द्र)

यही वो मुबारक रात थी जिसमें अल्लाह की बरकतों की हम पर सबसे पहली बारिश हुई। यही वो मुबारक रात थी जिसमें आसमानी रहमतों ने ज़मीन को मालामाल किया। लिहाज़ा हर मुसलमान का फ़र्ज़ है कि वो इस मुबारक रात में खुदा की रहमतों का मांगने वाला हो और उस रहमान और रहीम के आगे सर झुका दे और गुनाहों से लदे अपने माथे को बहुत ही विनम्रता के साथ ज़मीन पर रख दे और बहुत ही आजिज़ी के साथ कहेः

(ऐ अल्लाह! तू निहायत माफ़ करने वाला है, तू माफ़ी को पसन्द करता है, बस तू हमें माफ़ कर दे)

यही वो दुआ थी जिसको अल्लाह के रसूल स0अ0 ने उम्मुल मोमीनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि0 के पूछने पर कि अल्लाह के रसूल शबकद्र में क्या दुआ मांगू तो आपने ये दुआ बतायी थी।

हां ये इसी मुबारक महीने की मुबारक रात है जिसमें रहमतों की घटांए झूम–झूम कर बरसती हैं, बरकतों के कमल खिलते हैं। शब–ए–क़द्र इतनी क़ाबिलेक़द्र है कि इस रात में बार–बार ये खुदाई ऐलान होता रहता है, है कोई माफ़ी चाहने वाला, कि मैं उसे माफ़ कर दूं, है कोई आफ़ियत चाहने वाला कि मैं उसे आफ़ियत अता कर दूं, है कोई रोज़ी तलब करने वाला कि मैं उसे रोज़ी इनायत करूं, है कोई सवाल करने वाला कि मैं उसके सवालों को पूरा करूं।

लैलतुल क़द्र या शब–ए–क़द्र रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अशरे की ताक़ रातों में है। हज़रत ओबादा बिन साबित रज़ि0 ने शब–ए–क़द्र के बारे में हुज़ूर स0अ0 से पूछा तो आपने इरशाद फ़रमाया कि रमज़ान के आख़िरी अशरे की ताक़ रातों में है यानि इक्कीस, तेइस, पच्चीस, सत्ताइस या उन्तीसवीं या रमज़ान की आख़िरी रात में भी हो सकती है।

जो शख़्स ईमान के साथ सवाब की नियत से इस रात में इबादत करे, उसके पिछले सब गुनाह माफ़ हो जाते हैं। जबकि उलमाए उम्मत का ख़्याल है कि रमज़ान की सत्ताइसवीं रात में शब–ए–क़द्र होने की संभावना बहुत अधिक है।

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स0अ0 ने फ़रमाया कि जब शब–ए–क़द्र होती है तो ज़िबरील अलै0 फ़रिश्तों की एक जमाअत के साथ दुनिया में नाज़िल होते हैं और उस शख़्स के लिये जो खड़े या बैठे अल्लाह का ज़िक्र कर रहा हो और इबादत में लगा हुआ हो रहमत की दुआ करते हैं।

शब–ए–क़द्र की फ़ज़ीलत के सिलसिले में है कि वो हज़ार महीनों से बेहतर है। हज़ार महीनों को अगर जोड़ा जाये तो 83 साल 4 महीने का समय होता है। यानि अगर किसी को इस रात में इबादत करना नसीब हो जाये तो दूसरी ख़ास रहमतों और बरकतों के इलावा वो 83 साल 4 महीनों की इबादत के सवाब का मुस्तहिक़ होता है बल्कि इससे भी ज़्यादा का क्योंकि कुरआन में लैलतुल क़द्र को हज़ार महीनों के बराबर नहीं हज़ार महीनों से बेहतर फ़रमाया गया है और अल्लाह की कुरदत और उसके ख़ज़ाने में कोई कमी नहीं कि वो जो चाहता है करता है और जो इरादा करे उसका फ़ैसला करता है।

अब जबकि मौसमें बहार चल रहा है तो क्यों न हम अपने आक़ा की तरफ़ पूरे तौर से ध्यानमग्न हो जांए और बहुत ही आजिज़ी के साथ उससे लौ लगांए और अपनी ख़ताओं को माफ़ करा ही कर दम लें कि पता नहीं ये दिन फिर नसीब हों या न हों। ..... (शेष पेज 12 पर)

मस्जिद-ए-अक़्सा की शहादत का इस्राईली मन्सूबा और मुस्लिम देशों की बेहिसी

मौलाना असरारुल हक़ क़ासमी

इस्राईली शासन के क़िब्ल–ए–अव्वल को शहीद करने के जिस इरादे की जानकारी हुई है वो पूरी दुनिया के मुसलमानों में बेचैनी पैदा करने वाली है। इस जानकारी के बाद कई जगह पर प्रदर्शन भी हो चुके हैं। मिस्र के जामिया अज़हर के हज़ारों छात्रों ने रैली निकाली और इस्राईली शासन और उसकी नापाक साज़िश की निंदा की, साथ ही उन्होने अरब लीग और ओ.आई.सी. पर भी टिप्पणियां कीं। हक़ीक़त यही है कि अरब लीग और ओ.आई.सी. इस्राईल के संबंध से जिस हद तक ढिलाई बरत रही है वो विचारणीय है। इस्राईल के ज़ुल्म जितने बढ़ते जा रहे है, उसी क़दर अरब देश ख़ामोश होते जा रहे हैं। मुस्लिम देशों की संस्था ओ.आई.सी. को चाहिये कि वो इस्राईल के ज़ुल्म की खुलकर निंदा करे और उसे दो टूक बता दे कि अब और ज़ुल्म को बर्दाश्त नहीं किया जायेगा तो फिर वो कोई भी हंगामा खड़ा करने से पहले सौ बार सोचेगा। मगर मुस्लिम देशों की तरफ़ से किसी प्रकार की प्रतिक्रिया न आने के कारण से वो ज़्यादा ज़ामिल होता जा रहा है और अपने सभी नापाक इरादों को अन्जाम दे रहा है। अगर मुस्लिम देश इस्राईली शासन से न डरते और उससे दो टूक बात करते तो शायद क़िब्ल–ए–अव्वल कि ख़िलाफ़ इतनी बड़ी साज़िश करने की उसमें हिम्मत न होती।

पूरी दुनिया को भी इस बात पर इस्राईल की निंदा करनी चाहिये कि उसे इतने गुप्त रूप से मस्जिदे अक़्सा की बुनियाद को खोखला कर दिया, सुरंगे बिछायीं और अब इसे अप्राकृतिक भूकम्प या धमाके के साथ शहीद करना चाहता है। अमरीका जो इस्राईल की पीठ पर हाथ रखे हुए है आख़िर उसे कभी तो इन्साफ़ की बात कहनी चाहिये और इसी तरह पश्चिमी देशों को भी ज़रा ठन्डे दिमाग़ से सोचना चाहिये। बड़ी हैरत की बात है कि एक ओर अमरीका और उसके मित्र देश मुसलमानों से हमदर्दी की बात करते हैं और दूसरी ओर उनके ख़िलाफ़ होने वाले ज़ुल्म पर ख़ामोश रहते हैं। क्या उन्हें लीबिया, सीरिया, और ईराक़ के मुसलमानों से ही हमदर्दी थी कि उनकी आड़ लेकर वहां के शासन को उलट दिया, मगर उन्हे फ़िलिस्तीन के मुसलमानों से क्यों हमदर्दी नहीं? क्यों वो उनके ऊपर ज़ुल्म करने वाले इस्राईल को सबक़ नहीं सिखाता और उसके ख़िलाफ़ कार्यवाही नहीं करता।

ग़ैरों से क्या शिकायत, अस्ल शिकायत तो अपनों से है, यानि मुस्लिम देशों से जिनकी संख्या पचास से भी अधिक है। उनके पास दुनिया का एक बड़ा क्षेत्रफल है। कई देशों के पास तो प्राकृतिक भण्डार भी हैं, जैसेः तेल, पेट्रोल, गैस इत्यादि मगर फिर भी दुनिया के नक़्शे पर उनकी तस्वीर बड़ी धुंधली है। दूसरे देश उनसे ज़्यादा दृढ़ और उन्नति प्राप्त हैं जिसके कारण अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उनको बड़ा स्थान प्राप्त है और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मन्डियों में भी उनका अधिपत्य स्थापित है। कई देश तो प्राकृतिक संसाधनों से वंचित होने के बावजूद केवल अपनी तकनीक और योग्यता और मज़बूत पूंजीवादी ढांचे रखते हैं और दूसरे देश को क़र्ज़ देने की पोज़ीशन में हैं।

इस्लामी दुनिया के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कमज़ोर होने के कई कारण बताये जाते हैं, जिनमें एक विशेष कारण ये है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में इस्लामी दुनिया का कोई प्रभाव नहीं है। संयुक्त राष्ट्र के अहम ओहदों तक भी उनकी रसाई नहीं है। परिणाम ये कि इस्लामी दुनिया को हर मामले में ज़बरदस्त नुक़सान का सामना करना पड़ रहा है। सबसे बड़ा ख़तरा तो मुस्लिम देशों के सामने ये पैदा हो चुका है कि वो अपनी रक्षा कैसे करें और इस सदी में जबकि इस्लाम विरोधी ताक़तें मुस्लिम दुनिया के ख़िलाफ़ एक होकर लंबी जंगे छेड़ देना चाहती हैं और अपनी सभी पुरानी रंजिशों का बदला लेकर इस्लाम को संकुचित कर देना चाहती हैं। क्योंकि वो हर तरह से मुसलमानों के मुक़ाबले में ज़्यादा मज़बूत हैं। यद्यपि इस्लाम विरोधी ताक़तों ने पहले भी बार–बार मुसलमानों को निशाना बनाया, मगर उन्हे कामयाबी न मिली। क्योंकि

इस्लाम के बहादुरों ने बड़ी हिम्मत और क़ौमी एकता का सुबूत देकर उनके हर हमले का मुंह तोड़ जवाब दिया और उनको पीठ दिखाने पर मजबूर कर दिया। लेकिन आज स्थिति अलग नज़र आती है। आज ऐसा महसूस नहीं होता कि इस्लाम विरोधी ताक़तों के हमलों का मुसलमानों की ओर से बराबरी का जवाब मिलेगा। इसके कई कारण हैं, एक तो ये कि मुसलमान आपसी फूट और इख़्तिलाफ़ का शिकार हैं जिसके कारण ये उम्मीद न के बराबर रह जाती है कि किसी एक मुस्लिम देश पर इस्लाम विरोधी ताक़तों के द्वारा किये जाने वाले हमलों पर सभी मुस्लिम देश एक हो जायेंगे और वो अपनी क्षमता के अनुसार अपने मुस्लिम देश की रक्षा करेंगे, दूसरा कारण ये है कि उनके पास बचाव की ताक़त और नयी टेक्नालाजी की कमी है जिसके कारण वो ताक़तवर देशों से टक्कर लेने की पोज़ीशन में नहीं हैं।

पिछले कुछ सालों के दौरान अमरीका और उसके मित्र देशों के द्वारा दो मुस्लिम देशों पर हमले किये गये। 11 सितम्बर के वाक़्ये के बाद पहला हमला अफ़ग़ानिस्तान पर किया गया। हमले का जो कारण बताया गया था वो बहुत ही नाक़िस था, मगर उसके बावजूद ज़बरदस्ती अफ़ग़ानिस्तान पर जंग थोप दी गयी और ताबड़तोड़ हमले शुरू कर दिये गये। यहां ग़ौर करने की बात ये है कि जब अफ़ग़ानिस्तान पर हमला करने के लिये अमरीका परतौल रहा था, उस समय दूसरे सभी मुस्लिम देश तमाशाई बने रहे, किसी ने अमरीका और उसके मित्र देशों से ये पूछने की जुर्रत न की कि बिना ठोस सुबूत के अमरीका का एक कमज़ोर देश पर हमला करना क्या सही है? पूरी कोशिश की जाती की अमरीका के इस ज़ालिम क़दम को रोका जाये। मगर मुस्लिम देशों ने ऐसा कुछ नहीं किया, बल्कि कुछ देशों ने तो उल्टे अमरीका का ही साथ दिया और अफ़ग़ानिस्तान को बर्बाद करने में ज़बरदस्त जोश दिखाया। नतीजा ये हुआ कि आख़िरकार अफ़ग़ानिस्तान को तबाह करके रख दिया गया।

दूसरा हमला अमरीका ने ईराक़ पर किया। हमले के लिये अमरीका ने जो कारण प्रस्तुत किये वो भी बेबुनियाद थे। अमरीका का कहना था कि ईराक़ के पास रसायनिक गैस और घातक हथियार हैं, जबकि संयुक्त राष्ट्र के द्वारा बार–बार उन हथियारों की खोज की जा चुकी थी। इस समय इस्लामी दुनिया के देशों के लिये आवश्यक था कि वो अमरीका के इस नापाक इरादे को पूरा न होने देते और उससे हथियारों के मज़बूत सुबूत मांगते। मगर उन देशों की ये जुर्रत न हो सकी कि वो ज़ालिम अमरीका को उसके ज़ुल्म से रोक सकते। इसका एक कारण ये था कि ख़ुद उनमें आपस में फूट पड़ी थी, दूसरा कारण ये था कि उनके पास इतनी जुर्रत व ताक़त न थी कि वो दुनिया की एक ताक़त के सामने कुछ कहने का हौसला जुटा पाते। अन्जाम ये हुआ कि अमरीका ने ईराक़ को भी आड़े हाथों ले लिया और ज़ालिमाना कार्यवाही करके उस देश को बर्बाद कर दिया। जबकि ईराक़ मुस्लिम देशों में एक अहम देश की हैसियत से जाना जाता था और उसके पास दूसरे कई मुस्लिम देशों के मुक़ाबले में कहीं बेहतर रक्षा तन्त्र था। वहां शिक्षा की स्थिति भी बेहतर थी और देश की आर्थिक स्थिति भी अच्छी थी। मगर अमरीका ने उसे 90 के दशक से ही अपनी सज़ा का शिकार बना रखा था। 1991 में उसके ख़िलाफ़ एक ज़बरदस्त जंग छेड़ दी गयी थी जिसमें बड़े पैमाने पर बमबारी की गयी और वहां की अर्थव्यवस्था को चौपट करने के लिये तरह तरह की आर्थिक पाबन्दियां लगायी गयीं। देखते ही देखते ईराक़ में भुखमरी हो गयी, लोग दाने दाने को मोहताज हो गये और चीज़ें अपने आप इतनी ज़्यादा मंहगी हो गयीं थी कि लोगों के लिये उनका ख़रीदना मुश्किल हो गया। कुछ ही सालों की अन्दर ईराक की स्थिति ख़राब हो गयी। दूसरी बार फिर ईराक़ की रही सही ताक़त, अर्थव्यवस्था को तबाह करने के लिये कुछ साल पहले ज़बरदस्त हमले किये गये थे। हैरान करने वाली बात ये कि जिन कारणों को लेकर ईराक पर हलमे किये गये थे, वो आज तक साबित न हो सके। हथियार लाख कोशिश के बाद भी न मिल सके। ज़रूरी तो ये था कि मुस्लिम दुनिया इस पर ज़बरदस्त ग़म व ग़ुस्से का इज़हार करती और अमरीका के ज़ुल्म की खुलकर निंदा करती, लेकिन ऐसा नहीं हो सका।

मुस्लिम देशों की इस कमज़ोरी से फ़ायदा उठाते हुए अब अमरीका और उसके मित्र देश खुलकर इस्राईल के समर्थन में बोलते हैं, बल्कि उसका सहयोग करते हैं, उसकी सहायता करते हैं। जिससे शै पाकर वो इस्लामी दुनिया की आंखों में आंखें डालकर बात करता है और पूरी दुनिया के मुसलमानों को चिढ़ाता है। इस्लामी दुनिया को अब भी होश में आ जाना चाहिये वरना आने वाला समय उसके लिये और ज़्यादा ख़तरनाक हो सकता है।

रमज़ानुल मुबारक के फ़ज़ाइल और कुछ मसाइल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

रमज़ानुल मुबारक का महीना बहुत ही बाबरकत है। कुरआन व हदीस में तफ़सील से इसके फ़ायदे बयान किये गये हैं और इसमें रोज़ा रखने को फ़र्ज़ क़रार दिया गया है। अल्लाह तआला ने अपने कलाम पाक में इसकी फ़ज़ीलत बयान करते हुए इरशाद फ़रमाते हैं: "रमज़ानुल मुबारक का महीना वही है जिसमें कुरआन नाज़िल किया गया, जो लोगों के लिये हिदायत है और हक़ की राह पाने और हक़ और बातिल में फ़र्क़ करने की रोशन दलील है" (सूरह बक़रा: 185) और रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ क़रार देते हुए इरशाद होता है: "ऐ ईमान वालों! तुम पर उसी तरह रोज़ा फ़र्ज़ किया गया जैसे तुमसे पहले लोगों पर किया गया था, ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ" (सूरह बक़रा: 183) यानि रोज़े से नफ़्स को उसकी इच्छाओं से रोकने की आदत पड़ेगी तो फिर उसको उन इच्छाओं से जो शरीअत में हराम हैं रोक सकोगे और रोज़े से नफ़्स की ताक़त भी बढ़ेगी। तो अब तुम संयमी हो जाओगे, रोज़े में बड़ी हिकमत यही है कि सरकश नफ़्स की इस्लाह हो और शरीअत के हुक्म जो नफ़्स को बोझ लगते हैं उनको पूरा करना आसान हो जाये, और मुत्तक़ी बन जाओ।

आगे इरशाद है: "सो तुममे जो कोई इस महीने को पाये, तो उसके रोज़े ज़रूर रखे" (सूरह बक़रा: 185)

हदीसों में भी रमज़ानुल मुबारक के फ़ायदे बड़ी अधिकता से आये हैं। इसलिये हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है फ़रमाते हैं आंहज़रत स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया, "जब रमज़ानुल मुबारक का महीना आ जाता है तो आसमान के सभी दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं, और शैतान को ज़ंजीरों में जकड़ दिया जाता है" (बुख़ारी, मुस्लिम)

हज़रत सहल बिन साद फ़रमाते हैं कि नबी करीम स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया, "जन्नत के आठ दरवाज़े हैं, इसमें एक दरवाज़े का नाम है "बाबुर रेयान" (सैराब करने वाला गेट) है, इससे सिर्फ़ रोज़ेदार ही दाख़िल होंगे" (बुख़ारी, मुस्लिम) मतलब ये है कि जिस तरह बड़े–बड़े प्रोगामों में वी.आई.पी. लोगों के लिये अलग गेट बनाया जाता है, इसी तरह अल्लाह तआला रोज़ेदारों का खुसूसी इकराम फ़रमायेगें।

हज़रत अबुहुरैरा रज़ि0 एक दूसरी रिवायत में फ़रमाते हैं, नबी करीम स0अ0 का इरशाद है: "आदम की औलाद के हर काम के सवाब में दस गुने से सात सौ गुने तक का इज़ाफ़ा किया जाता है, अल्लाह तआला का इरशाद है सिवाये रोज़े के इसलिये कि वो केवल मेरे लिये होता है, और इसका बदला मैं खुद दूंगा, (मतलब ये कि नेकियों पर सवाब देने में साधारण नियम से कहीं बढ़कर) आदम की औलाद अपनी ख़्वाहिश और खाना–पीना सिर्फ़ मेरे लिये छोड़ती है, रोज़ेदार को दो खुशियां हासिल होती हैं, एक रोज़ा खोलते वक़्त, और एक अपने परवरदिगार से मुलाक़ात करते वक़्त, रोज़ेदार के मुंह की बू अल्लाह के नज़दीक मुश्क़ की खुशबू से ज़्यादा पसन्द होती है, और रोज़ा ढ़ाल है (जिससे मोमिन शैतान के वार से अपनेआप को बचा लेता है) और तुममे से कोई जब रोज़ा रखे तो न मुंह से बुरी बात निकाले, न शोर व हंगामा मचाये, अगर कोई उससे गाली गलौज करे या झगड़ा करे तो कहे तो मैं रोज़े से हूं।" (मुत्तफ़िक़ अलैह)

सहरी व इफ़्तार की फ़ज़ीलत: हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है फ़रमाते हैं, नबी करीम स0अ0 ने फ़रमाया: "सहरी खाया करो, इसलिये कि सहरी खाने में बरकत है।" (मुत्तफ़िक़ अलैह)

हज़रत अम्र बिन अल आस रज़ि0 से रिवायत है फरमाते हैं, नबी करीम स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया: "हमारे और यहूद और नसारा के रोज़े में फ़र्क़ (हमारा) सहरी खाना है।" (मुस्लिम)

हज़रत अनस से रिवायत है फ़रमाते हैं, नबी करीम स0अ0 मग़रिब की नमाज़ पढ़ने से पहले कुछ ताज़े खजूर से इफ़्तार करते थे, अगर ताज़े खजूर न हों तो कुछ दूसरी खजूर से इफ़्तार करते थे, और अगर खजूरें न हों तो कुछ घूंट पानी पी लिया करते थे। (तिरमिज़ी)

हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद रज़ि0 फ़रमाते हैं, "जो किसी रोज़ेदार को इफ़्तार कराये, या किसी मुजाहिद को असलहा उपलब्ध कराये, तो उसे उसी के बराबर अज्र व सवाब मिलता है।" (बेहक़ी व शुएबुलईमान व शरहुस्सना)

इफ़्तार की दुआः हज़रत उमर रज़ि0 से रिवायत है फ़रमाते हैं, "आंहज़रत स0अ0 जब इफ़्तार करते थे तो ये फ़रमाते थेः (प्यास जाती रही, रगें तर हो गयीं और सवाब दर्ज हो गया) (अबूदाऊद)

हज़रत मआज़ बिन ज़हीरा से रिवायत है, नबी करीम स0अ0 जब इफ़्तार करते तो फ़रमातेः (या अल्लाह मैंने आपके लिये रोज़ा रखा, और आपही के रिज़्क़ से इफ़्तार किया) (अबूदाऊद मुरसला)

रोज़े को तोड़ने वाली चीज़ेंः खाने–पीने और सम्भोग करने से रोज़ा टूट जाता है और क़ज़ा के साथ कफ़्फ़ारा भी लाज़िम आता है। क़ज़ा का मतलब ये है कि उस रोज़े के बदले में रोज़ा रखे, और कफ़्फ़ारा का मतलब ये है कि रोज़ा तोड़ने की वजह से एक बड़ा गुनाह हो गया, जिसकी माफ़ी तभी होगी जब कफ़्फ़ारा अदा करे। कफ़्फ़ारा ये है कि दो महीने लगातार रोज़े रखे, अगर बीच में एक भी रोज़ा छोड़ दिया तो फिर से रोज़ा रखना पड़ेगा, और अगर बीमारी या बुढ़ापे के कारण रोज़ा नहीं रख सकता तो साथ ग़रीबों को खाना खिलाये, या साठ ग़रीबों में से हर एक को 1 किलो 633 ग्राम गेहूं दे।

लेकिन अगर कोई भूल कर खा पी ले तो रोज़ा नहीं टूटता है, इसीलिये हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 से रिवायत है फ़रमाते हैं, नबी करीम स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः "जो रोज़े की हालत में भूल जाये और खा पी ले तो वो रोज़ा पूरा करे, इसलिये कि उसको अल्लाह तआला ने खिलाया पिलाया है।" (मुत्तफ़िक़ अलैह)

नाक कान में तेल या दवा डालने से रोज़ा टूट जाता है। लेकिन सिर्फ़ क़ज़ा लाज़िम होती है कफ़्फ़ारा नहीं। लेकिन कान में पानी डालने से रोज़ा नहीं टूटता है, जहां तक आंख का संबंध है तो उसमें सुरमा लगाने या दवा डालने से रोज़ा नहीं टूटता है, इसलिये हज़रत अनस रज़ि0 फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति नबी करीम स0अ0 के पास आया, और उसने पूछा, मेरी आंख में तकलीफ़ है क्या मैं रोज़ा रखते हुए सुरमा लगा लूं, आप स0अ0 ने फ़रमाया, हां। (तिरमिज़ी)

रोज़े की हालत में सर में तेल लगाना, पानी में डुबकी लगाना और ग़ुस्ल करना जायज़ है, इसीलिये एक सहाबी रज़ि0 फ़रमाते हैं, मैंने मक़ामे अर्ज में आंहज़रत स0अ0 को रोज़े की हालत में प्यास या गर्मी की वजह से सर पर पानी डालते हुए देखा। (अबूदाऊद)

अगर कोई व्यक्ति स्खलित (नापाक) हो जाये तो जल्द नहा लेना चाहिये, लेकिन अगर दिन के कुछ हिस्से में नापाक रहे तो उससे रोज़े पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। इसीलिये हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रमज़ान में आंहज़रत स0अ0 को नापाकी की हालत में फ़र्ज का वक़्त आ जाता था तो आप स0अ0 ग़ुस्ल फ़रमा लेते थे, और रोज़ा रखते थे। (मुत्तफ़िक़ अलैह)

बहुत से लोग समझते हैं कि क़ै (उल्टी) हो जाने से रोज़ा टूट जाता है लेकिन उनका ये ख़्याल सही नहीं है। क़ै से रोज़ा उसी समय टूटता है जब जानबूझ कर मुंह भर कर क़ै करे, या ख़ुद से मुंह भर कर क़ै हो, और वो उसे निगल जाये, इसलिये कि कुछ हदीसों में है कि क़ै से रोज़ा टूट जाता है, और कुछ में है कि क़ै से रोज़ा नहीं टूटता है, उलमा ने दोनों में फ़र्क़ इसी तरह बताया है कि जानबूझ कर क़ै करने या वापस निगल लेने से रोज़ा टूटेगा, बक़िया शक्लों में नहीं।

रोज़ा टूटने और न टूटने से संबंधित जो चीज़ें फ़िक़ अकेडमी ने बतायी हैं वो सबकी सब अध्ययन योग्य हैं, अतः उनको हम क्रमवार लिखते हैंः

1. दिल की बीमारी से संबंधित जो दवा ज़बान के नीचे रखी जाती है, अगर रोज़े की हालत में उसका इस्तेमाल किया जाये और उस दवा के टुकड़े या उससे मिल कर बने हुए थूक को अन्दर निगलने से बचा जाये तो रोज़ा नहीं टूटेगा।

2. दमा इत्यादि में इन्हेलर (Inhaler) के प्रयोग से रोज़ा टूट जायेगा।

3. जो दवा भाप की शक्ल में मुंह या नाक के द्वारा खींची जाये, चाहे मशीन के द्वारा खींची जाती हो या किसी और ज़रिये से उससे रोज़ा टूट जायेगा।

4. इन्जेकशन (injection) के द्वारा जो दवा रगों या गोश्त में पहुंचायी जाती है चाहे उससे केवल दवा की आवश्यकता पूरी की जाये या खाने की रोज़ा उससे नहीं टूटता, लेकिन रोज़े की हालत में खाने की आवश्यकता की पूर्ति और क्षमतावृद्धि के लिये अनावश्यक इन्जेकशन लेना

मकरूह है।

5. ग्लूकोज़ (Glucose) चढ़ाने से रोज़ा नहीं टूटता, लेकिन चूंकि ये एक हद तक इन्सान के खाने की ज़रूरत को भी पूरा करता है इसलिये अकारण ग्लूकोज़ चढ़ाना मकरूह है।

6. (अ) रोज़े की हालत में मौजूए हुक़्ना (मल त्याग करने वाली नाली का आख़िरी हिस्सा जहां से बड़ी आंत शुरू होती है) तक अगर दवा पहुंचाई जाये तो उससे रोज़ा ख़राब हो जायेगा, चाहे वो बहने वाला हो या जमा हुआ।

(ब) बवासीरी मस्सों पर दवा लगाने से रोज़ा नहीं टूटेगा, फिर भी अत्यधिक आवश्यक न होने पर इसका प्रयोग नहीं करना चाहिये।

(ज) पेट की बीमारी की खोज के लिये पीछे के रास्ते से केवल यन्त्र डालने से रोज़ा नहीं टूटेगा लेकिन अगर यन्त्र में दवा या कोई तर चीज़ लगायी गयी हो तो रोज़ा टूट जायेगा।

7. (अ) औरत की शर्मगाह के बाहिरी हिस्से में दवा लगाने रोज़ा नहीं टूटेगा, लेकिन अन्दर के हिस्से में दवा रखने से रोज़ा टूट जायेगा।

(ब) मर्द की शर्मगाह में दवा या नलकी डालने रोज़ा नहीं टूटेगा।

(ज) बीमारी की खोज के लिये भ्रूण तक यन्त्र पहुंचायें जांए और उस यन्त्र पर कोई दवा और दूसरी चीज़ लगायी गयी हो तो रोज़ा टूट जायेगा।

रोज़े की हालत में आक्सीजनः बहुत सी बीमारियों में बीमारी की शिद्दत के समय मरीज़ को आक्सीजन पहुंचायी जाती है। इसका हुक्म ये है कि आक्सीजन के साथ अगर कोई दवा न हो तो रोज़ा ख़राब नहीं होगा इसलिये कि ये सांस लेना है और सांस लेने से रोज़ा नहीं टूटता है। लेकिन अगर इसके साथ दवा के भी जर्रे हों तो रोज़ा उससे रोज़ा टूट जायेगा।

रोज़े की हालत में मिस्वाक करना सुन्नत है। हदीसों से इसका सुबूत मिलता है लेकिन मन्जन और कोई टूथपेस्ट इत्यादि मकरूह है बल्कि बिना कारण उनका प्रयोग नहीं करना चाहिये, लेकिन गुल से बाक़ायदा तम्बाकू की तलब होती है, लिहाज़ा उससे रोज़ा टूट जायेगा। वल्लाहु आलम

शेष : शब-ए-क़द्र

बड़ा बदनसीब है वो शख़्स जिसको ख़ैर व बरकत की ये रात मिले और वो उससे फ़ायदा न उठाये। हज़रत अनस रज़ि0 ने फ़रमाया कि बार रमज़ानुल मुबारक का महीना आया तो हुज़ूर स0अ0 ने फ़रमाया कि तुम्हारे ऊपर एक महीना आया है जिसमें एक रात है जो हज़ार महीनों से बेहतर है। जो शख़्स इस रात से महरूम रह गया वो मानो सारी ख़ैर से महरूम रह गया और उसकी भलाई से महरूम नहीं रहता मगर वो शख़्स जो हक़ीक़त में महरूम ही है।

हदीस शरीफ़ में आता है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जो शख़्स मेरी तरफ़ एक हाथ क़रीब होता है मैं उससे दो हाथ क़रीब होता हूं और जो मेरी तरफ़ आहिस्ता भी चलता है तो मैं उसकी तरफ़ दौड़कर चलता हूं।

अल्लाह तआला का ये रहम व करम आम दिनों में होता है तो जो व्यक्ति लैलतुल क़द्र में अल्लाह तआला की याद व इबादत में लगा हुआ हो उसके साथ अल्लाह की रहमत व इनायत का क्या मामला होगा। उस रात में तो उनके दर पर पड़ जाये।

रमज़ानुल मुबारक और लैलतुल क़द्र की अज़मत का तो ये आलम है कि जब ईद का दिन होता है तो अल्लाह तआला फ़रिश्तों से पूछता है कि क्या बदला है उस मज़दूरी का जो अपना काम पूरा कर चुका हो। वो अर्ज़ करते हैं कि हमारे माबूद, हमारे आक़ा उसका बदला यही है कि उसकी मज़दूरी पूरी-पूरी दे दी जाये। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं कि ऐ फ़रिश्तों! मैं तुम्हे गवाह बनाता हूं, मैंने इनको रमज़ान के रोज़े और तरावीह के बदले में अपनी रज़ा और मग़फ़िरत अता कर दी और बन्दों से इरशाद फ़रमाता है कि ऐ मेरे बन्दों, मुझसे मांगों, मेरी इज़्ज़त की क़सम, मेरे जलाल की क़सम, आज के दिन इस महफ़िल में मुझसे अपनी आख़िरत के बारे में जो भी सवाल करोगे, अता करूंगा, और दुनिया के बारे में जो सवाल करोगे उसमें तुम्हारी मसलिहत पर नज़र करूंगा। मेरी इज़्ज़त की क़सम जब तक तुम मेरा ख़्याल रखोगे, मैं तुम्हारी कमज़ोरियों को छिपाता रहूंगा। मेरी इज़्ज़त की क़सम और मेरे जलाल की क़सम, तुम्हे मुजरिमों के सामने ज़लील और रूस्वा न करूंगा।

बस अब बख़्शे बख़्शाए अपने घरों को लौट जाओ। तुमने मुझे राज़ी कर दिया और मैं तुमसे राज़ी हो गया। फ़रिश्ते ये देखकर खुशियां मनाते हैं और उनके चेहरे खुशी से खिल जाते हैं।

मुसलमान और भौतिकविज्ञान (Physics)

मौलाना सिराजुद्दीन नदवी

आम तौर पर ये समझा जाता है कि इस्लामी दौर में हैयत, गणित और साहित्य पर ज़्यादा काम हुआ है और भौतिक विज्ञान (Physics) इत्यादि पर कोई बहुत अच्छा काम नहीं हुआ। मगर ये उस दौर की इल्मी ख़िदमत से अज्ञानता का नतीजा है। अगर मुसलमानों के पराकाष्ठा के युग का ईमानदारी से अध्ययन किया जाये तो ये वास्तविकता साफ़ हो जाती है कि मुसलमानों ने भौतिकविज्ञान में जो कार्य किये हैं वो अमूल्य हैं।

भौतिक विज्ञान के सिलसिले में जिस सबसे पहले मुसलमान वैज्ञानिक का नाम लिया जा सकता है वो "अबू इस्हाक़ याकूब कुन्दी" हैं जिन्होने इस विषय पर छोटे–बड़े 44 नुस्ख़े तैयार किये हैं। इनमे भौतिक विज्ञान की विभिन्न शाखाओं की चर्चा की गयी है। इन नुस्ख़ों को हम भौतिक विज्ञान का सबसे पहला लेख कह सकते हैं। वो पहला मुसलमान वैज्ञानिक है जिसने लहरों का अध्ययन किया। गिरते हुए जिस्मों की रफ़्तार को निश्चित करने का सुराग़ लगाया और प्रकाशविज्ञान में प्रकाश के प्रकट होने पर खोज की। इस विषय पर उसने दो किताबें लिखीं जिनमें "प्रकाश का ज्ञान" बहुत प्रसिद्ध है जिसका लैटिन में अनुवाद हुआ है। यूरोप के इल्म हासिल करने वाले सदियों तक इससे लाभ उठाते रहे।

उसने पहली बार संगीत पर साइसं के नज़रिये से बहस की। उसने बताया कि हर नग़्मा विभिन्न सुरों के मिलन से पैदा होता है। जब किसी सुर की आवाज़ पैदा की जाये तो उसमें लहरें उठती हैं और ये लहरें जब कान से टकरातीं हैं तो आवाज़ का एहसास पैदा होता है। हर सुर के लिये एक सेकेन्ड में उत्पन्न होने वाली तरंगों की संख्या निश्चित है जिसे इस सुर की फ्रीकुएन्सी (Frequency) कहते हैं। इसी फ्रीकुएन्सी से सुर का वर्ग निश्चित होता है।

दसवीं और ग्यारहवीं सदी का दौर ज्ञान के आधार से मुसलमानों का युग रहा है। इस युग में मुसलमान यूनानी, ईरानी और हिन्दुस्तानी इल्म व फ़न का अरबी में अनुवाद करके उनके कामों व जानकारियों को मालूम कर चुके थे और खोज व संघर्ष करके विभिन्न प्रकार के ज्ञान को विकसित करने के रास्ते पर चल चुके थे।

इस दौर में अबूबक्र राज़ी (मृत्यु: 932ई0) का नाम बहुत प्रसिद्ध है। उसने विभिन्न विषयों पर 250 से अधिक किताबें लिखीं जबकि वो डाक्टर की हैसियत से अधिक प्रसिद्ध हैं। मगर उसने भौतिक विज्ञान पर भी बहुत काम किया है। मादा, मकान, तग़ज़िया, वृद्धि, मनाज़िर व मुराया, बसीरात और गति पर उसने अपनी किताबों में बहुत अधिक चर्चा की है। वो पहला भौतिक विज्ञान का माहिर है जिसने ये स्वीकार किया कि ज़मीन आपसी कशमकश के सहारे फ़िज़ा में लटकी हुई है।

इस अवसर पर ये बताना बेजा न होगा कि कुन्दी और राज़ी ने अरस्तू के नज़रियों की कड़ी आलोचना की और उसके बहुत से नज़रियों से इख़्तिलाफ़ करके नयी खोज प्रस्तुत की।

इख़्वानुस्सफ़ा की 52 पत्रिकाओं में से 17 पत्रिकांए भौतिक विज्ञान से संबंधित हैं जिनमें खाद्य पदार्थों की खोज, भूकम्प, ज्वार–भाटा, मनाज़िर व मुराया तत्व से संबंधित स्पष्ट चर्चा है।

अलफ़ाराबी (मृत्यु: 950ई0) ने भी भौतिक विज्ञान पर उल्लेखनीय कार्य किया है। इसने सबसे पहले भौतिकविज्ञान का विभाजन और वर्गीकरण किया। इसने अपनी किताब "अहसाउल उलूम व मुरातबहा" में ज्ञान को पांच भागों में बांटा है और हर भाग में बयान किये गये इल्म को अलग अलग शाखों में विभाजित कर दिया। भौतिक विज्ञान को उसने आठ भागों में बाटा है।

उलमाए इस्लाम में इब्ने सीना (मृत्यु–1038ई0) को एक श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है जबकि उसकी ख्याति एक डाक्टर की हैसियत से ज़्यादा है मगर भौतिक विज्ञान में भी इब्ने सीना ने ज़बरदस्त काम किया है। उसकी मशहूर किताब "अश्शफ़ा" इस विषय पर दुनिया की पहली विश्वस्नीय और सविस्तार किताब है। डाक्टर लेब्सोरगन ने "अश्शफ़ा" का अनुवाद जर्मन ज़बान मे किया और उसकी व्याख्या भी प्रकाशित की। डाक्टर ग्लूयूम ने शफ़ा की एक किताब अन्नफ़्स (Chapter of Psychology) का अनुवाद लैटिन भाषा में किया।

साधारण भौतिकविज्ञान में इब्ने सीना ने ज़बरदस्त खोजें की। वो पहला वैज्ञानिक है जिसने रफ़्तार का नज़रिया पेश किया और उसे साबित किया। उसने बताया कि रोशनी ऐसे ज़र्रात का नाम है जो प्रकाश के जिस्म से निकलते हैं। इसलिये रोशनी की एक रफ़्तार होती है। उसका नज़रिया आज भी विश्वस्नीय है। इब्ने सीना ने इजसाम तिब्बी के

लाहेक़ात, गति, सुकून, ज़मान, मकान, ख़ला, तनाही, तमास, इल्तमास और इतिसाल पर अत्यधिक चर्चा की। इब्ने सीना ने वज़ने मख़सूस पर भी बुनियादी बातचीत की।

इसी ज़माने में अलबैरूनी ने (मृत्युः 1049ई0) भौतिकविज्ञान में अमूल्य योगदान किये हैं। इसने खोजा कि प्रकाश की गति आवाज़ की गति से दोगुनी है। उसने समन्दर के पानी के नमकीन होने का कारण बयान किया। उसने फव्वारों और प्राकृतिक झरनों से पानी निकल आने के कारण बताये हैं उन्हे मौजूदा मास्कोनियात (Hydrostatic) का आधार घोषित किया जा सकता है।

उसने आठ क़ीमती पत्थरों और धातुओं का वज़ने मख़सूस पहली बार पूरी सेहत के साथ निश्चित किया। भौतिकविज्ञान के मसलों पर इब्नेसीना के साथ मुरासलात की शक्ल में जो बहसें सामने आतीं हैं वो बहुत क़ीमती हैं।

इब्नुल हैसम (मृत्युः 1021ई0) भौतिकविज्ञान, आकाशगंगा की विद्या और इन्जीनियरिंग का ज़बरदस्त माहिर था।

उसने सबसे पहले प्रकाश की वास्तविकता और महत्व को बयान किया और सबसे पहले ये नज़रिया पेश किया कि प्रकाश भी एक प्रकार की क्षमता है। इब्नुल हीसम ने प्रकाश से संबंधित इजसाम की दो क़िस्में की हैं।

1–नूरफ़शां जिस्मः वो जिस्म जो खुद रोशनी देता है।

2–बेनूरः वो जिस्म जो खुद रोशनी नहीं देता बल्कि उस पर कोई भी रोशनी पड़ सकती है। बेनूर जिस्म की तीन क़िस्में हैं:

1– पारदर्शी जिस्मः वो जिसमें रोशनी आर–पार हो जाये जैसे– साफ़ पानी, हवा, साफ़ शीशा

2– अर्धपारदर्शीः वो जिस्म जिससे रोशनी साफ न गुज़र सके बल्कि मध्यम हो जाये और दूसरी तरफ़ की चीज़ें स्पष्ट रूप से दिखाई न दें जैसेः बारीक कपड़ा, रगड़े हुए शीशे।

3– जिसमें रोशनी बिल्कुल आरपार न हो सके और दूसरी तरफ़ की चीज़ें बिल्कुल नज़र न आयें। जैसेः लोहा, पत्थर वग़ैरह।

इब्नुल हैसम ने प्रकाश के प्रतिविम्ब (Reflection) के नियम को बहुत ही स्पष्ट रूप से बयान किया है। जैसे– जब प्रकाश की किरणें एक रास्ते से दूसरे रास्ते तक पहुंचती हैं। (जैसे हवा से पानी में प्रवेश करती हैं) तो वो अपने पहले रास्ते से एक तरफ़ को फिर जाती है।

साधारण भौतिकविज्ञान में अबुलबरकात बग़दादी (मृत्युः 547ई0) की सेवा को नज़रअन्दाज़ नहीं किया जा सकता है। उसने सबसे पहले गतिवान चीज़ों की गति पर बहस करते हुए उस क़ानून की तरफ़ रहनुमाई की जो गतिविज्ञान (Dynamic) का आधारभूत नियम माना जाता है। उसने अपनी किताब "अल्मुअतबर" में भौतिकविज्ञान के बहुत से मसलों पर अपनी खोज बयान की है। वो ज़न व क़यास के बजाये अपनी खोज का आधार अनुभव पर रखता है।

मुफ़क्किरीने इस्लाम में इमाम ग़ज़ाली रह0 (मृत्युः 505ई0) और इमाम राज़ी रह0 (मृत्युः 606ई0) श्रेष्ठ स्थान रखते हैं। मगर उन्होने भौतिकविज्ञान के मसलों से भी बहस की है। इसलिये उनकी किताबों में ज़मान, मकान, इजसाम, अरवाह, इम्तिज़ाज व तरकीब और इदराकात जाहिरा जैसे मौजूआत पर तफ़सीली बहस मौजूद है।

नसीरूद्दीन तोसी (मृत्युः 672ई0) ने भी "अलमुनाज़िर" जैसी किताब लिखकर बसीरात पर क़ाबिलेक़द्र इज़ाफ़ा किया है। तोसी ने शआओं के इनअकास व इनअताफ़ पर बड़ी तफ़सील से बहस की है।

नूरूद्दीन तोसी ने अपनी किताब "अलमुनाज़िर" में गिनतियों के मसलों में बड़ी क़ीमती बहस की है। वो पहला वैज्ञानिक था जिसने क़ौसे क़ज़ा की तश्कील का एक सही और साफ़ हल पेश किया। उसने बताया कि पहली क़ौस फ़िज़ा में आवेज़ां छोटे–छोटे मदूर आबी क़तरे में सूरज की किरणों के दो प्रतिविम्ब और एक दाख़िली इन्अक़ास से बनती है और पूरी क़ौस दो इन्अिताफ़ात और दो दाख़िली इन्अकासात से।

मुसलमानों के श्रेष्ठ चिन्तक इब्ने रशीद की खिदमत भी भौतिक विज्ञान में श्रेष्ठ स्थान रखती हैं। उसने अरस्तू की किताब भौतिकविज्ञान की व्याख्या लिखी जिसके लैटिन मे अनुवाद आज भी सुरक्षित हैं। वो पहला खोजी है जिसने साबित किया कि आंख में देखने का काम केवल पुतली के कारण नहीं होता बल्कि आंख के अन्दर के रेटिना पर उसका असर पड़ता है जिसे हम देखते हैं।

काज़ी शहाबुद्दीन क़राफ़ी ने भी पचास बसीराती मसलों पर बहस की है जिसे हम इल्मे तबयात में एक क़ाबिले क़द्र इज़ाफ़ा होता है।

भौतिक विज्ञान की दुनिया में कमालुद्दीन फ़ारसी का नाम भी हमेशा रोशन रहेगा जिसने इब्नुल हैसम की किताब अलमुनाज़िर की व्याख्या तनक़ीहुल मनाज़िर लिखी और भौतिकविज्ञान के बहुत से विषयों पर अपनी खोजी नज़रिये पेश किये।

बेटी की पैदाइश ज़हमत नहीं रहमत है।

मुफ़्ती फ़य्याज़ अहमद महमूद बरमारे हुसैनी

ख़ुशी और ग़म मानव जीवन के दो अभिन्न अंग हैं। हर इन्सान को ज़िन्दगी के किसी न किसी मोड़ पर इन चीज़ों से वास्ता पड़ता है। कभी दिन की शुरूआत ख़ुशी से होती है ग़म से रात के अन्धेरे इन तमाम ख़ुशियों को ज़िबह कर देते हैं, कभी आसमानों पर ख़ुशी के सफ़ेद व साफ़ बादल नज़र आते हैं लेकिन वो बादल काले होकर ख़ुशी को ख़त्म करने का ऐलान कर देते हैं। कुछ लोग ख़ुशी की बारिश से खूब सैराब होते हैं लेकिन अचानक ग़म का सैलाब उस ख़ुशी को तबाह व बर्बाद कर देता है। इसी तरह कुछ लोग औलाद की नेमत को पाकर ख़ुश नज़र आते हैं तो कुछ लोग इस नेमत से महरूमी के कारण ग़मग़ीन दिखाई देते हैं कुछ मां–बाप तो नरीना औलाद की बेटे की नेमत पर ख़ुश लेकिन बेटी की नेमत पर परेशान और ग़मज़दा मालूम होते हैं। जबकि ये हक़ीक़त है कि किसी भी ख़ुशी व ग़म का मालिक व ख़ालिक सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआला ही है। इसी तरह लड़के और लड़की के एतबार से औलाद देने का मालिक अल्लाह तआला ही है, इसलिये अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमायाः "आसमानों और ज़मीनों की सलतनत अल्लाह तआला ही के लिये है, जो चाहता है पैदा कर देता है, जिसको चाहता है बेटियां देता है, और जिसे चाहता है बेटा देता है, या उनके लिये बेटे और बेटियां दोनों अता कर देता है, और जिसे चाहे बांझ कर देता है वो बड़े इल्म वाला और कामिल क़ुदरत वाला है।" (सूरह अलज़ुख़्रफ़: 49–50)

ज़माना जाहिलियत की बहुत सी बुरी आदतों में से एक बुरी आदत ये थी कि उस ज़माने में औरत को मनहूस समझा जाता था और उसके पैदा होते ही उसके ज़िन्दा दफ़न की तैयारी शुरू होती, और एक ज़िन्दा रूह को ज़मीन के हवाले किया जाता लेकिन इस्लाम के आने पर केवल इस बुरी आदत पर बन्दिश ही नहीं लगी बल्कि लड़की की पैदाइश को बाबरकत क़रार दिया गया, उसकी परवरिश को सवाब की वजह बतलायी गयी। इसे इज़्ज़त व एहतराम का तोहफ़ा अता किया गया, और उसे कमतर समझे जाने और उसकी तौहीन को नापसन्द किया गया। इसके जीने के हक़ के छीन लेने वाले को मुजरिम क़रार देकर क़ातिल कहा गया। अल्लाह तआला का इरशाद हैः "कि जब ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की से सवाल किया जायेगा कि वो किस गुनाह की वजह से क़त्ल की गयी" (अत्तकवीरः 8–9) इस सवाल से अस्ल क़ातिल की पकड़ मक़सूद होगी न कि ज़िन्दा दफ़न की गयी लड़कियों की, लेकिन ज़माना जाहिलियत से सदियों दूरी के बावजूद आज भी बेटी की पैदाइश पर बाप का सर शर्म से झुक जाता है, एक मां को केवल इसलिये ज़लील किया जाता है कि उसने बेटी को जन्म दिया, एक बीवी अपने पति के तेवरों का शिकार केवल इसलिये होती है कि उसने नौ माह तक उसकी मनि के बोझ को एक बेटी की शक्ल में उठाकर सारी तकलीफ़ों को बर्दाश्त किया, ये सारी चीज़ें इस उन्नतिप्राप्त दौर में जाहिलियत के ज़माने की एक बेहतरीन नुमाइन्दगी और अकासी कर रहीं हैं। जो बिल्कुल नामुनासिब और नाजाएज़ हरकतें हैं, और ख़ुदा के फ़ैसले से खुली बग़ावत है और अगर कहीं बेटी की पैदाइश मनहूसियत की पहचान होती तो यक़ीनन अल्लाह तआला अपने रसूल स0अ0 के लिये जो औलाद अता फ़रमायी थीं उसको भी बाक़ी न रखा बल्कि आप स0अ0 की बेटियों ने अपने बाप से परवरिश पायी।

आम तौर पर आदमी बेटी की पैदाइश पर इसलिये नाराज़ होता है कि वो बेटे से महरूम रहता है। या बहुत ज़्यादा लड़कियों की पैदाइश मां–बा पके लिये सर का दर्द बन जाती हैं, इसलिये मां–बाप के दिल में बेटे के लिये जो सोच व ख़्याल पहले से जन्म लिये होते हैं वो बेटी के द्वारा पूरी होने की संभावनांए कम होने लगती हैं, लेकिन अस्ल में ये सोच क़ुरानी सोच के ख़िलाफ़ हैं, क़ुरआन इस बात का गवाह है कि जो इरादे बेटे की पैदाइश से संबंधित हैं उनको बेटी के ज़रिये भी पूरा किया जा सकता है। और अनुभव भी इस बात का गवाह है कि बेटी किसी भी तरह एक बेटे से कम नहीं होती क्योंकि बहुत सी ऐसी लड़कियां हैं जिन्होने शरई सीमाओं में रहते हुए अपने हौसले से ये साबित कर दिखाया कि वो घरेलू ज़िम्मेदारियों को बहुत अच्छी तरह से अन्जाम देने के साथ–साथ समाज के सुधार की ताक़त रखती हैं। इल्म के मैदान में भी वो किसी से कम नहीं बस मां–बाप के भरोसो की आवश्यकता है फिर वो अपनी जगह ख़ुद बना लेती हैं।

मां के गर्भ में परवरिश पाने वाले नवजात का अस्ल हक़ तो ये है कि वो दुनिया में आये, अपने वालिदैन की

शफ़क़त और ममता के साये में परवरिश पाये, इस दुनिया की चमक–दमक को महसूस करे, इसी मक़सद की ख़ातिर शरीअत ने मां के गर्भ में परवरिश पाने वाले बच्चे की हिफ़ाज़त की ग़रज़ से जो चीज़ें बतायीं हैं उससे इस बात का अन्दाज़ा होता है कि इस्लाम में एक इन्सानी जान की कितनी अहमियत है, इसलिये अल्लाह ने फ़रमायाः "तलाके बाइन की सूरत में अगर कोई औरत पेट से है तो उसके गर्भ की सेहत की ख़ातिर उसकी मां के नफ़क़ा को शौहर पर वाजिब किया गया है, इसी तरह अगर किसी औरत पर क़सास वाजिब हो जाये, या कोई औरत ज़िना कर जाये, लेकिन वो उपरोक्त स्थिति में गर्भवती हो तो गर्भ की रक्षा की ख़ातिर न उस पर क़सास वाजिब होगा और न किसी प्रकार की सज़ा व सीमा जारी होगी।" एक ओर शरीअत ने गर्भ की रक्षा का इतना एहतमाम फ़रमाया तो दूसरी ओर दुनिया में गर्भपात की जो लहर जारी है वो हैरान करने वाली है, ग़ैर तो ग़ैर मुसलमान औरतें भी दूसरों पर वरीयत प्राप्त करने के प्रयास में हैं। बेटे की इच्छुक औरतें पैदाइश से पहले ही अल्ट्रासाउन्ड के द्वारा गर्भ से संबंधित जानकारी प्राप्त कर लेती हैं। और बेटी होने की स्थिति में अपना गर्भपात करा देती हैं। जबकि गर्भ का समय 120 दिन हो जाने के बाद गर्भपात हराम और नाजाएज़ है। अहले सुन्नत वल जमाअत व सभी धर्मों के फ़ुक़्हा की इस बात पर सहमति है कि बच्चे में रूह फूंकने के बाद उसका गर्भपात के द्वारा क़त्ल करना हराम है। और इसे किसी भी हालत में जीवन से वंचित करना नाजाएज़ है।

शासन ने 24/जनवरी को "कन्या दिवस" के रूप में मनाने का फ़ैसला किया है। इस अवसर पर लड़कियों की पैदाइश पर खुशियां मनायी जायेगी और कन्या हत्या की समाजी लानत के बारे में लोगों को जागरूक किया जायेगा। ये ऐलान यक़ीनन खुशी देने वाला है। और मायूसी के अंधेरे में रोशनी की किरन है। लेकिन ये रोशनी की किरन उस समय लाभकारी होगी जब इसके अनुसार अमल भी किया जायेगा यानि इस बुरे काम को कानूनन जुर्म घोषित कर दिया जाये इसके करने वालों को दूसरे मुजरिमों की तरह किसी धारा के अन्तर्गत सज़ा घोषित की जाये और जनता को भी शासन का सहयोग करना चाहिये कि ऐसे मां–बाप की फ़ौरन पहचान करें ताकि इस संगीन जुर्म पर क़ाबू पाया जा सके, ताकि अल्लाह की नाराज़गी से बचा जाये, अगर इस पर क़ाबू न पाया गया तो वो समय दूर नहीं किइस दुनिया की रौनक़ ख़त्म हो जायेगी और इस कायनात का जिस चीज़ से तसव्वुर है वो बाक़ी नहीं रहेगी।

शेष : पश्चिम की इस्लाम दुश्मनी.....

आपकी मक्की ज़िन्दगी से ये सबक़ मिलता है कि बढ़े हुए क़दम को पीछे न हटाना चाहिये, चाहे वो आगे न बढ़ सके, हक़ पर जमे रहना चाहिये, चाहे नफ़्स उसका कितना ही विरोध करे, ग़लत को ग़लत ही समझो चाहे उससे हुकूमत ही क्यों न हासिल हो, बातिल के मुक़ाबले में डटे रहना चाहिये चाहे इसको ग़लबा व आम सहमति ही क्यों न हासिल हो, लोगों को ख़ैर की दावत देते रहना चाहे उसके जवाब में तकलीफ़ ही क्यों न सहनी पड़े, फ़र्ज़ को फ़र्ज़ समझकर अदा करते रहना चाहे उसका नतीजा सामने न आये, ज़िम्मेदारी को ज़िम्मेदारी समझकर अन्जाम देते रहना, चाहे उसका कोई बड़ा फ़ायदा न दिखाई दे, मर्दे मोमिन का अपनी मर्दान्गी पर क़ायम रहना ही उसकी विशेषता है, जवां मर्दी है चाहे उसके चारों ओर की हर–हर चीज़ उसको पीस डालना चाहती हो।

अगर हम सही अर्थों में मुसलमान हैं और इस्लाम की हक़ीक़त न केवल ये कि हमारे दिल में उतर गयी है बल्कि रग–रग में बस गयी है तो हमारा भी यही किरदार और कैरेक्टर होना चाहिये कि हालात चाहे कितने ही विपरीत क्यों न हों हम अपनी इस्लामियत और मुस्लिम विशेषताओं व किरदार पर क़ायम रहें। अगर हम अपनी अनुभवहीनता, अज्ञानता या ग़लत माहौल से प्रभावित होकर कोई ग़लत काम कर चुकें हो तो हक़ीक़त सामने आने के बाद फ़ौरन उसको सही कर लें और हक़ की तरफ़ लौट आयें।

आम ज़िन्दगी और समाज में, घर और ख़ानदान में, मदरसा और ख़ानकाह में, जहां भी किसी के साथ कोई अन्याय हो रहा हो तो फ़ौरन इस्लामी शिक्षा के अनुसार उसको न्याय दिलाने का प्रयास करें। अगर हम किसी मिल या फ़ैक्ट्री या कारख़ाने के मालिक हैं, कुछ मज़दूर और वर्कर हमारे मातहत हैं तो उनके भी अधिकारों का ध्यान रखें, हम जहां रहते हैं वहां कुछ और लोग भी रहते हैं, उनमें मुसलमान भी हैं और ग़ैर मुस्लिम भी, उनके साथ हमारा सुलूक व बर्ताव वही होना चाहिये जो अल्लाह के रसूल स0अ0 ने बताया बल्कि बरत कर दिखाया, हम दुनिया की दूसरी क़ौमों के लिये नमूना व रोशनी थे, हमारे अख़लाक़ व व्यवहार से प्रभावित होकर दूसरी क़ौमें इस्लाम लाती थीं मगर अब हम इस हाल को पहुंच गये हैं कि मीर दर्द का ये शेर बड़े दर्द के साथ पढ़ना पड़ता हैः

हर चन्द आईना हूं पर इतना हूं नाकुबूल।
मुंह फेर ले वो जिसके मुझे रूबरू करें।।

दहशतगर्दों की आर्थिक सहायता

डाक्टर मुहम्मद अजमल फ़ारूक़ी

प्रग्या और पुरोहित की गिरफ़्तारी के बाद पूछताछ की ख़बरों में एक महत्वपूर्ण ख़बर उन आंतकवादियों के आर्थिक नेटवर्क और साधन के बारे में इन्डियन एक्सप्रेस में प्रकाशित हुई थी जिसके अनुसार सूरत, महाराष्ट्र, दिल्ली और जम्मू के बड़े पूंजीपतियों के द्वारा उन हिन्दु आतंकवादी ग्रुप की आर्थिक सहायता की जाती है; मगर न जाने क्यों हमारी खोजी एजेन्सियां और हिन्दु/हिन्दी मीडिया ने इस ख़बर को दबा दिया है। जबकि आतंकवाद के विरुद्ध कानूनों में स्वंय हमारी सरकार आर्थिक सहायता देने वालों को सख़्त सज़ा देने की वकालत करती है और इस पर अमल भी कर रही है। संघ परिवार के आक़ा अमरीका और इस्राईल इस आर्थिक सहायता के खुले हुए जुर्म पर इस्लामी दुनिया की बहुत सी संस्थाओं पर पाबन्दी लगाकर उनकी सम्पत्तियां ज़ब्त कर चुके हैं। टाइम्स आफ़ इन्डिया के 29 सितम्बर 2011 के अंक में एक ख़बर प्रकाशित हुई है जिसके अनुसार अहमदाबाद में स्थापित हिन्दु पूंजीपती मुकेश अम्बानी की अध्यक्षता और चेयरमैनी में स्थापित दीन दयाल उपाध्याय पेट्रोलियम यूनिवसिर्टी के प्रोग्राम में क़ातिल मोदी की अध्यक्षता में भाषण कराया और अपने भाषण में कहा कि "मोदी ने हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तानियों को गुजरात पर गर्व करना सिखाया है। दुनिया गुजरात की उन्नति और आप की कार्य प्रणाली को ग़ौर से देख रही है। गुजरात की खुशक़िस्मती है कि इसको मोदी जैसी उत्साही शासन मिला है, मैं केवल आपका धन्यवाद कर सकता हूं।" (टाइम्स आफ़ इन्डिया, न्यूज़ सरवर 29 TNN/सितम्बर 2011)

भारत की धर्मनिरपेक्ष सरकार का ख़ज़ाना केन्द्र से लेकर गांव तक किस तरह संस्कृत, गऊशाला, सर्वशिक्षा, ध्यान योगा और पुरानी सभ्यता की विरासत की सुरक्षा के नाम पर और आयुश के नाम पर हिन्दु/संघी वर्ग को मज़बूत करने के लिये किया जा रहा है। इसकी मिसाल 28 सितम्बर 2011 के टाइम्स आफ़ इन्डिया में मौजूद है। केन्द्र के मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने मध्य प्रदेश की बी.जे.पी. हुकूमत से विवरण मांगा है कि केन्द्रीय सर्वशिक्षा अभियान के फ़न्ड से किताबों के लिये ख़ास 19/करोड़ रुपये को किस तरह ख़र्च किया गया? ख़बर ये है कि इस फ़ंड के द्वारा आर.एस.एस. के बच्चों की मैग्ज़ीन "देवपुत्र" को सरकारी स्कूलों और सरस्वती शिशु मन्दिर (आर.एस.एस. के स्कूलों) में बांटा जा रहा है। केवल सरकारी स्कूलों की संख्या 80 हज़ार है। इस पत्रिका के प्रकाशन की संख्या दस हज़ार है। ये इन्दौर "बाल कल्याण न्यास" के द्वारा आस.एस.एस के वृद्ध कार्यकर्ता कृष्ण कुमार आस्थाना के द्वारा निकाला जा रहा है। इसके विभाजन में ब्लाक के स्तर से सरकारी अधिकारी भी शामिल हैं।

संघ फ़िरक़ा परस्तों और दहशत परस्तों और दहशतगर्दों के हिमायती मुकेश अम्बानी की शासन में पकड़ कितनी है इसका अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि अहमदाबाद भाषण के दो दिन के बाद बिट्रिश पेट्रोलियम के CEO बाब डिपोवले के साथ एक दिन (29/सितम्बर को) में चार केन्द्रीय मंत्री आनन्द शर्मा, जयपाल रेड्डी, सलमान खुर्शीद और पी चिदम्बरम से मिले और शाम को मनमोहन सिंह, प्रनब मुखर्जी के अलावा प्रधानमंत्री के पर्सनल सेक्रेटरी से मिलना तय हुआ था। (टाइम्स आफ़ इन्डिया के 29 सितम्बर 2011ई0)

जिस सी ऐ जी (CAG) की रिपोर्ट पर 2जी स्पेक्ट्रम घोटाले पर हंगामा है, उसमें ये अंबानी भी शामिल है, इसी सीएजी ने अपनी रिपोर्ट में मुकेश अंबानी की तेल तलाश और निकालने वाली कम्पनी पर सरकार को करोड़ो रुपये का धोखा देने और नियमो की अनदेखी का आरोप लगाया; मगर उस लूट पर बी.जे.पी., मीडिया, अन्ना हज़ारे, प्रशांत भूषण सब चुप क्यों?

आप स०अ० की रहमदिली जानवरों के साथ

मुफ़्ती मुहम्मद मुजीबुर्रहमान देवदर्गी

इस दौर में जब कि मुसलमानों की शक्ल बिगाड़ कर पेश करने का काम बदस्तूर जारी है। मुसलमानों को मसीहा के बजाये क़ातिल, सुलह करने वाले के बजाये जंग करने वाले, अमन पसन्द के बजाये शिद्दत पसन्द के नामों से परिचित कराने की पुरज़ोर कोशिश की जा रही है। ग़ैर मुस्लिमों को ये बात ध्यान रखनी चाहिये कि मुसलमान कभी शिद्दत पसन्द और लड़ाकू हो ही नहीं सकता क्योंकि उसका रिश्ता ऐसे नबी स0अ0 से है जो केवल इन्सानियत के लिये ही नहीं बल्कि सारे जहानों के लिये रहमत बनाकर भेजे गये हैं। जिनकी रहमत का असर केवल इन्सानों तक ही महदूद न था; बल्कि उससे बढ़कर आप स0अ0 की रहमत का साया जानवरो और परिन्दों तक के लिये था। जहां आप स0अ0 ने अपनी शिक्षाओं के द्वारा जानवरों के साथ नर्मी की हिदायत दी, वहीं अमल के द्वारा भी जानवरों के साथ रहम व करम का मामला कर दिखाया। आज जबकि जानवरों के अधिकारों की सुरक्षा की ख़ातिर कई संस्थाएं जागरूक हो रही हैं, कई शासन जानवरों की सुरक्षा के लिये मुहिम चला रहे हैं, इन क़ानूनों को तोड़ने वालों के लिये कड़ी से कड़ी सज़ाओं के उपाय किये जा रहे हैं, उन क़ानूनों को तोड़ने वालों को क़ैद की सज़ाएं भी बर्दाश्त करनी पड़ रही हैं, कुर्बान जाइये नबी अकरम स0अ0 पर जिन्होने आज से चौदह सौ साल पहले जानवरों के अधिकार व सुरक्षा और उनकी हिमायत का ऐलान फ़रमाया, आप स0अ0 ने जानवरों को भूखा रखने, उसे तकलीफ़ देने, उस पर ताक़त से ज़्यादा बोझ लादने से मना फ़रमाया, और जानवरों को निशाना बनाने, जानवर पर लानत करने वाले को मुजरिम क़रार दिया, जानवरों को तकलीफ़ देने को आप स0अ0 ने संगदिली में बताया है।

जानवरों के साथ रहम व करम और उनके साथ नर्मी के बेशुमार वाक़्ये किताबों में दर्ज हैं: लेकिन हम कुछ वाक़्ये व बोल नक़ल करते हैं:

निशाना बाज़ी: जाहिलियत के ज़माने में जानवरों को तकलीफ़ देने के प्रचलित रूपों में एक मुख्य रूप जिन्दा जानवर को निशाना लगाने के लिये खड़ा करना था। ग़ौर कीजिये कि ज़िन्दा जानवरों को जब तीरों के ज़रिये छलनी किया जाता होगा तो किस हद तक तकलीफ़ होती होगी। आप स0अ0 ने इससे मना फ़रमाया, एक बार इब्ने उमर रज़ि0 क़ुरैश के कुछ नौजवानों के पास से गुज़रे जो कि एक जिन्दा परिन्दे को लटका कर निशाना लगा रहे थे, वो इब्ने उमर को देख कर इधर उधर हो गये, इब्ने उमर रज़ि0 ने पूछा कि ये काम किसने किया: इस काम के करने वाले पर अल्लाह की लानत है; फिर इब्ने उमर रज़ि0 ने आप स0अ0 का क़ौल नक़ल किया, "अल्लाह की लानत है उस शख़्स पर जिसने निशाना बाज़ी के लिये जिन्दा को इस्तेमाल किया।" (मुस्लिम: 958) एक बार इब्ने उमर रज़ि0 यहया बिन सईद रज़ि0 के पास आये तो बनी यहया का एक ग़ुलाम मुर्ग़ी को बांध कर निशाना लगा रहा था, इब्ने उमर रज़ि0 ने मुर्ग़ी को खोल दिया; फिर लोगों की तरफ़ रुख़ करके फ़रमाने लगे; इस बच्चे को डराओ कि इस तरह परिन्दे को क़ैद करके क़त्ल करने से रुके; इसलिये कि आप स0अ0 ने जानवरों को क़ैद करके क़त्ल करने से मना फ़रमाया है। (बुख़ारी: 5514)

परिन्दा और उसके मां-बाप मे जुदाई: औलाद से फ़ितरी मुहब्बत, जिस तरह अल्लाह तआला ने इन्सानों में वल्दियत रखी है; उसी तरह अल्लाह तआला ने ये जज़्बा जानवरों को भी अता किया है; कुछ ताक़तवर जानवर तो औलाद के जुदा होने पर हमलावर भी हो जाते हैं; इसी तरह एक वाक़्या आप स0अ0 के सफ़र में पेश आया, इब्ने मसऊद रज़ि0 फ़रमाते हैं हम सफ़र में थे, आप स0अ0 किसी ज़रूरत के लिये तशरीफ़ ले गये, इतने में हमने एक सुर्ख़ परिन्दे को उसके चूज़ों समेत देखा; लिहाज़ा हमने बच्चों को उठा लिया, उन चूज़ों की मां आप स0अ0 की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अपने बाज़ू हिलाकर कुछ कहने लगी, आप स0अ0 ने सहाबा किराम रज़ि0 से पूछा किसने इस परिन्दे के बच्चों को उससे जुदा करके तकलीफ़ दी है; उसके बच्चों को लौटा दो। (अबू दाऊद: 3675)

जानवरों पर एहसान मग़फ़िरत का ज़रिया: किसी की आवश्यकता की पूर्ति, किसी की तकलीफ़ को दूर करना, जिस तरह की ज़रूरत इन्सानों में पायी जाती है; उसी तरह जानवर भी एहसान के मुस्तहिक़ होते हैं; बल्कि बेज़ुबान जानवर इन्सानों के मुक़ाबले में कुछ ज़्यादा ही एहसान के मुस्तहिक़ होते हैं क्योंकि वो अपनी तकलीफ़ बयान करने के लिये ज़बान नहीं रखते; लिहाज़ा आप स0अ0 ने जहां इन्सानों के साथ एहसान की शिक्षा दी, वहीं जानवरों के साथ भी एहसान की ताकीद की है। बल्कि कुछ ख़ास मौक़ों पर जानवरों के साथ एहसान को मग़फ़िरत का मुस्तहिक़ क़रार

दिया। इसलिये आप स0अ0 ने फ़रमायाः एक राह पर चलने वाला प्यास की शिद्दत की वजह से कुंए में उतर कर पानी पी लेता है, जब कुंए से बाहर निकलता है तो क्या देखता है कि एक कुत्ता प्यास की शिद्दत से मिट्टी खा रहा है, उस शख़्स ने महसूस किया कि ये कुत्ता भी मेरी ही तरह प्यासा है; लिहाज़ा कुंए में उतर कर और अपने मोज़े में पानी भर लिया और कुत्ते की प्यास बुझायी और इस ख़िदमत पर अल्लाह ने उस बन्दे की क़द्रदानी की; और अल्लाह तआला ने उसकी मग़फ़िरत कर दी, सहाबा किराम रज़ि0 ने सवाल पूछा?क्या हमें जानवरों पर भी एहसान करने से अज्र मिलेगा?आप स0अ0 ने फ़रमायाः "हर जानदार पर एहसान करने से अज्र मिलेगा" (बुख़ारीः 6009) इससे ज़्यादा तअज्जुब वाला वाक़्या वो है, जो अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है, आप स0अ0 ने फ़रमायाः "एक बार प्यास की शिद्दत से एक कुत्ता कुंए के इद्र गिद्र घूम रहा था, क़रीब था कि वो प्यास की वजह से मर जाये; अचानक एक गुनहगार औरत जो बनी इस्राईल की थी; इस औरत ने अपने मोज़े को निकाला और कुत्ते को पानी पिला दिया, अल्लाह तआला ने उस औरत की मग़फ़िरत फ़रमा दी।" (बुख़ारीः 3467) ग़ौर करने की बात है कि ऐसे जानवर के साथ रहम करने को आप स0अ0 ने मग़फ़िरत का ज़रिया बताया, जिसे बहुत से उलमा ने सिरे से नजिस तक क़रार दिया है, कुछ उलमा ने अगर कुत्ता बरतन में मुंह डाल दे तो सात बार बरतन को धोने का हुक्म दिया है, इसके विपरीत जानवरों के साथ बुरा सुलूक कई बार इन्सान का जहन्नम तक ले जाता है। एक औरत ने एक बिल्ली को तकलीफ़ देने के कारण जहन्नम में चली गयी, इस औरत ने बिल्ली को बांध दिया था; उसको न खिलाती थी और न ही उसे छोड़ती थी कि वो बाहर अपने खाने का इन्तिज़ाम कर सके; यहां तक कि वो कमज़ोर हो गयी और मर गयी। (मुस्लिमः 2619)

जानवरों के साथ नर्मी का मामलाः न केवल ये कि आप स0अ0 खुद भी नर्मी का बर्ताव करते थे; बल्कि हज़रात सहाबा किराम रज़ि0 को भी उसकी ताकीद फ़रमाते, एक बार एक ऊंट बिदक गया। सहाबा किराम रज़ि0 के लिये उस ऊंट का संभालना मुश्किल हो गया, आप स0अ0 बाग़ में दाख़िल हुए, जिसमे ये ऊंट था, आप स0अ0 ऊंट की तरफ़ बढ़ रहे थे, तो सहाबा किराम रज़ि0 ने कहा कि ये ऊंट काटने वाले कुत्ते की तरह हो गया है, ये आप पर हमला कर सकता है, आप स0अ0 ने फ़रमायाः घबराने की कोई बात नहीं है, जब आप स0अ0 ने इस ऊंट पर नज़र डाली तो वो सजदे में गिर गया आप स0अ0 ने उसका माथा पकड़ा और उसको काम पर लगा दिया। ये देखकर सहाबा किराम रज़ि0 कहने लगे, जब जानवर आपको सजदा कर सकता है, हम इन्सान होकर आप को सजदा क्यूं न करें, आप स0अ0 ने फ़रमायाः "किसी इन्सान के लिये सजदा ठीक नहीं; अगर किसी इन्सान के लिये सजदा ठीक होता तो मैं औरत को हुक्म देता कि वो अपने शौहर का सजदा करे।" (मुस्नद अहमदः 12614) एक बार आप स0अ0 बाग़ में दाख़िल हुए, वहां एक ऊंट था, उसने जैसे ही आप स0अ0 को देखा तो वो रोने लगा, आप स0अ0 ने उसके आंसू पोंछे, वो ख़ामोश हो गया, आप स0अ0 ने उसके मालिक के बारे में पूछा तो एक अन्सारी सहाबा ने कहा कि मैं उसका मालिक हूं, आप स0अ0 ने फ़रमायाः "क्या तुम जानवर के सिलसिले में अल्लाह से नहीं डरते, जिसका अल्लाह ने तुम्हे मालिक बनाया है, उससे काम ज़्यादा लेते हो और भूखा रखते हो।" (अबू दाऊदः 2549)

ज़िबह में एहसान का पहलूः जानवर भी बहुत भावुक होते हैं, वो भी आसार और क़राएन (निशानियां) से पता लगा लेते हैं कि अब उनके साथ क्या मामला होने वाला है; इसीलिये आप स0अ0 ने जानवरों के सामने चाकू वग़ैरह तेज़ करने से मना किया; इससे जानवर को घबराहट होगी और आप स0अ0 ने ज़िबह में एहसान के पहलू को अपनाने की ताकीद की कि जानवर को मुकम्मल तौर पर ज़िबह किया जाये; कहीं से तड़पता हुआ न छोड़े, आप स0अ0 का फ़रमान हैः "अल्लाह तआला ने हर चीज़ में एहसान को लाज़िम किया है, जब तुम क़त्ल करो तो अच्छे अन्दाज़ में करो; जब तुम ज़िबह करो तो अच्छी तरह से ज़िबह करो, छूरी को तेज़ कर लिया करो, और ज़िबह होने वाले को राहत पहुंचाओ।" एक सहाबी रज़ि0 ने फ़रमायाः या रसूलुल्लाह स0अ0 मैं बकरी को ज़िबह करता हूं, उस पर रहम भी आता है, आप स0अ0 ने फ़रमायाः अगर तुमने बकरी पर रहम किया तो अल्लाह तआला तुम पर रहम करेगा। (मुसनद अहमदः 15592)

इब्ने अब्बास रज़ि0 फ़रमाते हैंः एक सहाबी जानवर को लिटा कर छुरी तेज़ करने लगे, आप स0अ0 ने फ़रमायाः तुम उस जानवर को कई मौतों से मारना चाहते हो, उसे लिटाने से पहले ही छूरी क्यों न तेज़ की। (मुस्तदरक हाकिमः 7563)

अबू अमामा रज़ि0 फ़रमाते हैंः जिसने ज़िबह होने वाली चिड़िया पर ही रहम क्यों न किया हो, अल्लाह तआला क़यामत के दिन उस पर रहम फ़रमायेंगे। एक सफ़र में एक साहब जानवर पर लानत भेजने लगे, आप स0अ0 ने फ़रमायाः जिसने इस ऊंटनी पर लानत की है वो हमारे साथ न आये। (मुसनद अहमदः 19765)

आपके दीनी सवालात

और

उनके जवाबात

फ़ज्र की सुन्नतों की क़ज़ा

प्रश्नः क्या फ़ज्र की नमाज़ क़ज़ा हो जाये तो सुन्नत पढ़ना चाहिये? (शौकत अली अत्तार, बिजनौर)

उत्तरः अगर ज़वाल से पहले फ़ज्र की क़ज़ा की जाये तो फ़र्ज़ के साथ सुन्नत भी पढ़ी जायेगी, ज़वाल के बाद सिर्फ़ फ़र्ज़ की क़ज़ा की जायेगी।

मन्नत के रोज़े

प्रश्नः मैने मन्नत मांगी थी कि जब मेरा काम हो जायेगा तो मैं ग्यारह रोज़े रखूंगी, मुझे ये जानना है कि ये रोज़े कैसे रखूं? (सादिया, इटली)

उत्तरः नज़र के वाजिब होने के बाद नज़र को फ़ौरन पूरा करना ज़रूरी है शर्त ये है कि इसमें कोई शरई रूकावट न हो। इसलिये अगर आपने लगातार रोज़े रखने की नियत मानी हो तो लगातार रोज़े रखना होगा।

सही और ज़ईफ़ हदीस

प्रश्नः क्या हनफ़ी ज़ईफ़ और क़वी हदीस एक तरह से मानते हैं? और अगर सभी हदीसें (सही, हसन, ज़ईफ़ इत्यादि) को एक ही तरह मानना है तो फिर उनको अलग क्यों करते हैं? (मुहम्मद इरफ़ान, रायबरेली)

उत्तरः सही और ज़ईफ़ हदीसों का दर्जा एक तरह का नहीं होता है, इसे सभी मुहद्दसीन और फ़ुक़्हा मानते हैं, हज़रात अहनाफ़ भी इसके क़ायल हैं, जबकि ये मुमकिन है कि हदीसों के उसूल में इख़्तिलाफ़ की वजह से किसी के नज़दीक कोई हदीस ज़ईफ़ हो और वही हदीस किसी के नज़दीक अपने उसूलों के बुनियाद पर सही हो।

ज़कात की अदायगी का वक़्त

प्रश्नः क्या ज़कात सिर्फ़ रमज़ान में ही देनी चाहिये? या साल भर या फिर कभी भी नियत करके दी जा सकती है? (अली ख़ान, लखनऊ)

उत्तरः ज़कात के लिये रमज़ान की कोई क़ैद नहीं, बल्कि साल पूरा होते ही ज़कात फ़र्ज़ हो जाती है, और अदायगी में जल्दी करना चाहिये।

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी रह0

प्रश्नः क्या मौलाना अली मियां नदवी रह0 ग़ैर मुस्लिमों में दावत देने के लिये कभी जमाअत की शक्ल में या लोगों को भेजा था?लगातार कोई संस्था इस काम के लिये उन्होने स्थापित की थी?मौलाना ज़ुबैर साहब और मौलाना साद साहब को उन्होने अपनी ख़िलाफ़त कब दी थी?(मुस्तफ़ा कमाल, अलीगढ़)

उत्तरः मौलाना को हमेशा इसकी फ़िक्र रही कि दावत–ए–हक़ हर एक तक पहुंचे, उन्फ़ुवाने शबाब में वो अपने बड़े भाई के कहने पर इसी मक़सद की ख़ातिर मुम्बई तश्रीफ़ ले गये थे और डाक्टर अम्बेडकर से मिले थे। अल्बत्ता उन्होने इसके लिये कोई जमाअत नहीं कायम की और बाक़ायदा इसके लिये कुछ ख़तरों को भांप कर किसी संस्था की स्थापना नहीं की लेकिन इस काम को बहुत ज़रूरी समझते थे और काम के करने वालों की पूरी सरपरस्ती करते थे। और आख़िरी वक़्त में इसकी ख़ास फ़िक्र करते थे। मौलाना ज़ुबैर साहब और मौलाना साद साहब को हज़रत मौलाना ने 1999ई0 में ख़िलाफ़त दी।

आफ़िस या घर में मछलियां पालना

प्रश्नः आफ़िस या घर में जो मछलियां पालने का शीशे का टैंक होता है, उसको रखने के बारे में इस्लामी शरीअत क्या कहती है?(शौकत अली अत्तार, बीजापूर)

उत्तरः अगर मछलियों के पालने के लिये मुनासिब इन्तिज़ाम रखा जाये कि उन्हें पानी, खाना और आक्सीजन की तकलीफ़ न होतो जायज़ है।

मर्दों के कान पर बाल का हुक्म

प्रश्नः मर्दों के कान पर जो बाल उगते हैं, क्या वो काट सकते हैं?(मुहम्मद मुदस्सिर, बंग्लौर)

उत्तरः मर्दों के कान पर जो बाल उगते हैं उनको काटना ठीक है।

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

ग़ैर मुस्लिमों के साथ संबंध

इस्लाम अपनी विशेषता और अपनी शिक्षा व दृष्टिकोण के आधार पर स्वंय में एक सभ्यता है। वो अपने मानने वालों को जीवन व्यतीत करने का एक तरीक़ा, रहन–सहन का नियम और समाज के ठोस आदेश देता है। लेकिन अपने अधिपत्य के बावजूद इस बात को नापसन्द करता है कि मुसलमान समाज में रहने वाली दूसरी क़ौमों और उनके मसलों से अज्ञान हों।

इस्लाम एक दीन–ए–फ़ितरत है। वो सन्यास के बजाय सामूहिक जीवन के नियम पर समाज की बुनियाद रखता है। और इसे परवान चढ़ाने और दृढ़ करने की पूरी हौसला अफ़ज़ाई करता है। इसके मानने वाले व्यक्तिगत माहौल में रहते हों या सामाजिक माहौल में जीवनयापन करते हों हर हालत में वो ग़ैर मुस्लिमों से संबंध को अच्छी निगाह से देखता है, और मुसलमानों को ग़ैर मुस्लिमों में इस्लामी दावत पहुंचाने की तलक़ीन भी करता है। इसलिये ग़ैर मुस्लिमों से मेल–जोल और उनके साथ सामाजिक संबंध न केवल अच्छे जीवन का एक अंग है और समाज की आवश्यकता है बल्कि एक दीनी आवश्यकता भी है।

ग़ैर मुस्लिमों के संबंध से इस्लाम ने जो अधिकार बयान किये हैं वो उच्च व्यवहारिक शिक्षा और इन्सान के साथ उसके शरीफ़ाना रवैये की दलील है। इस्लाम जबकि अक़ीदे के मामले में बहुत भावुक है मगर उसक बावजूद आम इन्सानी शिक्षा की उसने भरपूर रिआयत की है। और ऐसे ग़ैर मुस्लिमों के साथ अच्छे सुलूक को पसन्द किया है जो इस्लाम और मुसलमानों के साथ मुआन्दाना रवैया रखते हैं।

अल्लाह के रसूल स0अ0 ने जिस तरह अल्लाह के एक होने की शिक्षा दी है उसी तरह वहदत इन्सानी का दर्स भी दिया है। और अलग अन्दाज़ और अलग पैराये में इसको बार–बार साफ़ भी किया गया है। इसलिये आप ने इन्सानी रिश्तों की बुनियाद रहमदिली, और आपसी मुहब्बत पर रखते हुए बताया: "यानि तुम ज़मीन वालों पर रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा" (हदीस) इसी तरह आपका ये फ़रमान भी सुनहरे अक्षरों में लिखा जाने योग्य है: "यानि मख़लूक़ अल्लाह का कुन्बा है, और मख़लूक़ में अल्लाह के नज़दीक सबसे महबूब वो है जो इस कुन्बे के साथ बेहतरीन सुलूक करे।" (हदीस) इस्लाम की ये वो न समाप्त होने वाली शिक्षांए हैं जिसमें मुसलमान और ग़ैर मुस्लिमों का कोई भेद नहीं बरता गया है बल्कि मानवता को सारे संबंधों में विशेष स्थान दिया गया है।

इस्लाम ने जिस प्रकार ग़ैर मुस्लिमों से अच्छे व्यवहार की हिदायत दी है उसको पसन्द किया है वहीं इसके साथ कुछ सीमांए भी निश्चित की हैं। इसलिये इसने आम इन्सानी व समाजी संबंधों की इजाज़त ज़रूर दी है मगर ऐसे संबंधों से मना किया है जिससे इस्लाम की शिक्षाओं पर आंच आती हो। इसलिये ग़ैरमुस्लिमों की ऐसी मजलिसों में शिरकत की इजाज़त नहीं जिसमें इस्लामी शिक्षाओं या इस्लामी शख़्सियात का मज़ाक़ उड़ाया जाता हो, उनके धार्मिक प्रोग्रामों में शिकरत करना, उनके जैसा लिबास या रहन–सहन अपनाना, उनके धर्म को सही समझना, मुसलमानों के ख़ुफ़िया राज़ों पर उनसे बात करना, और ऐसी दोस्ती करना जिसके ग़लत प्रभाव व्यवहार व किरदार पर पड़ते हों, इस तरह के संबंध की बिल्कुल इजाज़त नहीं है। लेकिन अफ़सोस आज के हालात कुछ इस तरह हैं कि एक बड़ी संख्या ग़ैर मुस्लिमों से संबंध के नतीजे में उनसे इस हद तक प्रभावित होती है कि कभी कभी वो समाज के बाग़ी हो जाते हैं और इस्लाम को बदनाम भी करते हैं।

आजकल अख़बारों में जब जराइमपेशा लोगों के नाम छपते हैं तो उनमें मुसलमानों के नाम भी शामिल होते हैं। समाज में शायद ही कोई ऐसी बुराई हो जिसमें कोई मुसलमान लगा हुआ न हो, चोरी, जुआ, शराब, फ़रेब, लूट, रिश्वत और न जाने कौन–कौन सी बुराईयां हैं जिनमें सरेआम मुसलमानों के नाम उछाले जाते हैं और उससे पूरा मुस्लिम समाज बदनाम होता है। इसका आधारभूत कारण मुसलमानों का ग़ैर मुस्लिमों के साथ बग़ैर किसी बन्दिश के संबंध रखना, पूरे तौर पर उनके साथ समाजियत अपनाना, और परिणाम से आंखे बन्द करके उनके स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करना और उनके सांस्कृतिक प्रोग्रामों में शिरकत करना है।

आज हमारे देश में बिखराव की ज़हनियत रखने वालों की ये कोशिश है कि मुसलमान और ग़ैर मुस्लिमों के संबंध बेहतरीन न होने पायें। वो हमेशा आपस में झगड़ते रहें। इसके लिये व्यवस्थित रूप से दंगे कराये जाते हैं, कोर्स की किताबों में ज़हरीले विषय शामिल किये जाते हैं, धर्मस्थलों को निशाना बनाया जाता है। कभी किसी मस्जिद में धमाका होता है तो कभी किसी मन्दिर को निशाना बनाया जाता है। और कभी दहशतगर्दी के नाम पर बेगुनाहों को गिरफ़्तार किया जाता है। इन सब में मीडिया का अहम रोल होता है। इसके मुकाबिल मुसलमान न अपन बचाव में कुछ कह पाते हैं और न अपने हमवतनों के ज़हन व दिमाग़ से ग़लतफ़हमियों के प्रभाव को साफ कर पाते हैं। जिसके नतीजे में देश का माहौल ख़राब हो जाता है और ये देश उन्नति के बजाये धीरे–धीरे गृहयुद्ध की ओर बढ़ता जा रहा है, इसीलिये ये मुसलमानों की बुनियादी ज़िम्मेदारी है कि वो माहौल को बिगड़ने से रोकें, ग़लतफ़हमियों को दूर करें, और उसके लिये प्रभावित और सबसे विशेष ज़रिया ग़ैर मुस्लिमों को अपनी दीनी सीमाओं के साथ संबंध को बेहतर और मज़बूत बनाना है फिर भी हमारे संबंध ग़ैर मुस्लिमों के साथ उसी समय लाभकारी सिद्ध होंगे हम खुद इस्लामी शिक्षाओं के बरतने वाले और अख़लाक़े नबवी पर अमल करने वाले होंगे।

शेष : रमज़ान और रमज़ान के बाद

अब रमज़ान ख़त्म हुआ और 29 व 30 दिन की ट्रेनिंग से मर्दे मुसलमान गुज़रा तो अब उसके लिये क्या मुश्किल है कि आगे के महीनों में कम मेहनत व सब्र की पाबन्दियों को निभाये और अपने परवरदिगार के हुक्म को माने। वो हराम माल को हाथ न लगाये, अपने लिये जायज़ व हलाल चीज़ों को ही ले और इस्तेमाल करे, उसको कोई इन्सान भी न देखता हो और क़ीमती से क़ीमती माल सामने हो जिसको लेने में उसको कोई ज़ाहिरी रुकावट न हो लेकिन वो न ले इसलिये कि उसका मख़सूस रोज़ा ख़त्म हुआ लेकिन ये आम रोज़ा क़ायम है। जिन्सी एतबार से उसके परवरदिगार ने जो हदें उसको बतायीं हैं उन हदों को पार न करे किसी हराम जगह पर नज़र न डाले और दिल की इच्छा दिल में भी न आये।

मुसलमान की ज़िन्दगी रमज़ान में तो एक ख़ास दायरे में घेर दी जाती है जिसको निभाने पर वो रोज़ादार साबित होता है और उसके लिये उसके बदले में जन्नत की नेमतों की बशारत है। लेकिन ग़ैर रमज़ान में भी उसे बहुत सी पाबन्दियों के साथ रहना होता है और उसके लिये भी जन्नत की नेमतों की बड़ी बशारत है। फूल, फल, पानी, दूध, शहद और राहत के बेशुमार सामान की बशारतें हैं जो हमेशा हासिल होगीं। लेकिन कब?जब परवरदिगार की बतायी हुई और आसान पाबन्दियों को निभाया जाये।

अफ़सोस की बात है कि हम बहुत हद तक रमज़ानुल मुबारक की भूख व प्यास और दूसरी पाबन्दियों को निभा लेते हैं बल्कि पूरे–पूरे महीने और लगातार सालहा साल निभा लेते हैं लेकिन आम ज़िन्दगी में आसान सी पाबन्दियों को कई बार नहीं निभा पाते ये एहतियात कि वो जाएज़ व नाजाएज़ माल में शरई अहकाम के बीच फ़र्क़ करें और जो उनके लिये हलाल नहीं हैं उसको हाथ न लगांए और किसी का माल या सामान उसकी इजाज़त के बग़ैर न लें।

किसी ग़लत बात को स्वीकार न करें किसी पर आरोप या झूठा इल्ज़ाम न लगांए किसी को अकारण नुक़सान न पहुंचांए। अपने ऊपर जो दूसरों के हक़ हैं उनको पूरी तरह अदा करें। इस तरह मुसलमान सिर्फ़ रमज़ान ही के रोज़े का पाबन्द है और मुसलमान का मुसलमान होना इसी वक़्त मुकम्मल होता है जब वो दोनों तरह के रोज़ों की पाबन्दी करे।

मिस्वाक करने के फ़ायदे

आख़िरत के फ़ायदे

❖अल्लाह की रज़ा का हासिल होना।
❖नबी स0अ0 की सुन्नत है।
❖शैतान के वसवसे दूर हो जाते हैं।
❖इसकी बरकत से क़ब्र वसीअ हो जाती है।
❖जिस्म से रूह आसानी से निकलती है।
❖दिल पाक हो जाता है।
❖मिस्वाक करने वाले के लिये अम्बिया अलै0 भी अस्तग़फ़ार करते हैं।
❖शैतान उसकी वजह से दूर और नाख़ुश होता है।
❖अल्लाह की इताअत करने की हिम्मत और ताक़त नसीब होती है।
❖जन्नत के दरवाज़े उसके लिये खुल जाते हैं।
❖फ़रिश्ते उससे ख़ुश होते हैं।
❖नमाज़ के सवाब को बढ़ाती है।
❖क़ब्र में सुकून का ज़रिया है।
❖मौत के वक़्त कलिमा याद दिलाती है।
❖नज़ा में जल्दी होती है।
❖मिस्वाक के साथ वज़ू करके नमाज़ को जांए तो फ़रिश्ते पीछे चलते हैं।
❖मिस्वाक का एहतिमाम करने वाला पुलसिरात से बिजली की तरह गुज़रेगा।
❖मिस्वाक करने वाले के लिये अर्श के हामिलीन अस्तग़फ़ार करते हैं।
❖दोज़ख़ के दरवाज़े उस पर बन्द कर दिये जाते हैं।

दुनिया के फ़ायदे

❖मुंह की पाकीज़गी।
❖निगाह की रोशनी बढ़ाती है।
❖बलग़म को दूर करती है।
❖याद्दाश्त बढ़ाती है।
❖जिस्म का रंग निखारती है।
❖ज़बान की फ़साहत व दानिश बढ़ती है।
❖मनी में वृद्धि होती है।
❖कमर को ताक़त मिलती है।
❖चेहरे को बारौनक़ बनाती है।
❖अनावश्यक चीज़ों को बाहर कर देती है।
❖दांतों को चमकदार बनाती है।
❖इसकी बरकत से रिज़्क़ मिलने में आसानी हो जाती है।
❖मौत के अलावा हर मर्ज़ की शिफ़ा।
❖मसूढ़ों को मज़बूत करती है।
❖जिस्म को तन्दरुस्त रखती है।
❖बाल उगाती है।
❖इसपर मदावमत से ग़ुरबत दूर होती है।
❖खाना हज़म करती है।
❖बुढ़ापा जल्द आने नहीं देती।
❖औलाद की अधिकता का कारण है।
❖आवश्यकतापूर्ति में सहूलत और मदद देती है।

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
Arafat Kiran
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP - 10

VOLUME 4

AUGUST 2012

ISSUE 08

मोबाइल मैसेज सर्विस

अपने मोबाईल पर
रोज़ाना इस्लामी मैसेज
(SMS) प्राप्त करें:

टाइप करें Arafat
और भेज दें 56767 पर।

नोट:
ये सर्विस बिल्कुल मुफ़्त है
और DND नम्बरों पर भी
जारी है।

हमारी वेबसाइट
www.abulhasanalinadwi.org

रमज़ानुल मुबारक में होने वाला
कुरआन का दर्स – हदीस का दर्स
जुमे के बाद के बयान
आपके दीनी मसाएल व उनका हल

मोबाइल: 9918818558

SAMSUNG

इस पेज पर विज्ञापन देकर अपने कारोबार को बढ़ावा दें। सम्पर्क करें: 9918818558

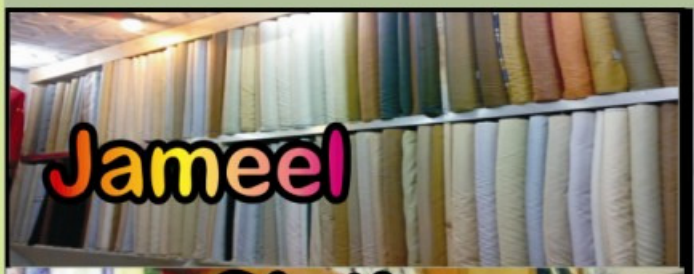

Chaman Market, Sabzi Mandi, Raebareli (U.P.)
सूटिंग शर्टिंग, ड्रेस मटेरियल, नक़ाब, दुपट्टा, चादर इत्यादि के लिये सम्पर्क करें।

हाजी ज़हीर अहमद 9335099726 | मुशीर अहमद 9307004141 | हाजी मुनीर अहमद 9336007717

Every Type of
AC, Refrigrator, Water Coolers,
Defreezers & Stabilizers.
Sales, Service & Contractor.

At

National Refrigration

Amar Hotel/Complex, Kuchehry Road, Raebareli

Proprietor | Mohammad Anwaar Khan

Mobile | 9415177310 9889302699

Designed by Mohammad Makky Hasani Nadwi

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi

MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI

Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile: 9918385097, 9918818558
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.